भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 7 | अंक 24 | उदयपुर रविवार 01 जनवरी 2023 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

अस्तित्व खोती भाषाएं

- सुरेश पंडित -

दुनिया में बोली जाने वाली भाषाओं की संख्या लगभग 7000 है। हर एक पखवाड़े में औसतन इनमें से एक भाषा अपना अस्तित्व खो रही है। समाज या देश की मुख्यधारा में पिछड़ों, आदिवासियों या दूरदराज के गांवों-ढाणियों में रहने वाले दीन-हीन लोगों को विकसित-सभ्य समाज की मुख्यधारा में लाने की इच्छा या उनके आने की मजबूरी, उन्हें अपने परिवेश से काटती ही है।

भाषा से भी दूर करती है। इसी तरह छोटी अर्थात् छोटे समुदायों की भाषाएं मरती हैं और बहुसंख्यक समुदायों की भाषा के बोलने वालों की संख्या बढ़ती जाती है। ये अप्रवासी लोग अपनी भाषा को छोड़कर जिस मुख्य-प्रचलित भाषा को अपनाते हैं उसमें अपने साथ लाये अपनी भाषा के शब्दों को समाविष्ट कर उसे तो समृद्ध बना देते हैं लेकिन स्वयं अपने प्रेरक अतीत से विलग हो जाते हैं।

अल्पसंख्यक आदिवासियों की छोटी-छोटी भाषाएं हर रोज नष्ट होने या बहुसंख्यकों की भाषाओं में विलीन होने की ओर अग्रसर हैं। मरणासन्न भाषाएं उन्हीं इलाकों में बोली या समझी जाने वाली हैं जो अविकसित या अल्पविकसित हैं। उन्नत क्षेत्रों की विकसित भाषाओं के सिर पर कहीं कोई खतरा नहीं मंडरा रहा है। भाषाओं के लुप्त होने की यह गति ठीक वैसी ही है जैसी कुछ वनस्पतियों या जीवजन्तुओं की है। जिस तरह इनके नाम मात्र सम्बंधित पुस्तकों या बड़े बुजुर्गों की जुबान पर रह गये हैं वैसे ही उन भाषाओं का अस्तित्व भी संदर्भों या स्मृतियों में बचा रह गया है।

लोक भाषाएं बचेंगी तो लोक संस्कृतियां भी बची रहेंगी। उनमें समाहित वे मूल्य भी बचे रहेंगे जो लोक को जीने की शक्ति, हर तरह की आपदा-विपदाओं से लड़ने की शक्ति और अपने आचार व्यवहार को मर्यादित रखने की शक्ति देते हैं।

प्राय: भाषाएं तभी मरती हैं जब उनके बोलने वाले यह मानने लगते हैं कि उन्हें गले से लगाये रखने से रोजी-रोटी अर्जित करने में बाधा आती है। आजकल विकासशील देशों में यह मान्यता तेजी से मजबूत होती चली जा रही है कि पारम्परिक ढंग से पढ़ेलिखे योग्य युवक भी तब तक अच्छी नौकरी नहीं पा सकते जब तक उनमें अच्छी तरह से अंग्रेजी बोलने-समझने की सामर्थ्य न हो। परिणाम यह है कि अच्छी अंग्रेजी बोलने वाले मातृभाषा भाषी युवकों से आज हर तरह से बेहतर हैसियत में हैं।

अंग्रेजी का इस प्रकार बढ़ता वर्चस्व और मातृभाषाओं के प्रति तेजी से पैदा की जा रही अवहेलना आगे चलकर कुछ भाषाओं की लोकप्रियता को क्षीण कर उन्हें मरणोन्मुख ही नहीं बनायेगी, लोगों को उनकी जड़ों, परम्पराओं, संस्कृतियों व इतिहास से भी विलग कर देगी। उसका सारा पारंपरिक ज्ञान विलुप्त हो जायेगा।

भाषाओं की यह अकाल मृत्यु उस साम्राज्यवाद की देन है जो चन्द विकसित देशों के हितों के लिए शेष सब देशों के हितों को खतरे में डाल देने से जरा भी नहीं हिचकिचाता। क्षेत्रीय भाषाएं स्थानीय बोलियों को और राजभाषा क्षेत्रीय भाषाओं को अपने में विलीन कर रही हैं।

पहले समाज के उच्च शिक्षित सम्पन्न वर्ग में ही अंग्रेजी के प्रति अतिरिक्त मोह था लेकिन पिछले कुछ दशकों से गरीब, पिछड़े, दलित लोग भी अपनी मातृभाषाओं का मोह त्याग कर अंग्रेजी को अपनाने की होड़ में शामिल हो रहे हैं।

क्योंकि वे भी आर्थिक सम्पन्नता और सुख सुविधायुक्त जीवन पाने की दौड़ में पीछे नहीं रहना चाहते।

किसी भी जाति या समुदाय को भाषा एवं परम्पराएं एक प्रकार की विशिष्टता, सांस्कृतिक पहचान देती हैं। इससे वे हर तरह की विपत्ति का एकजुट होकर सामना कर लेते हैं। उनकी इस सामूहिकता को तोड़ने के लिए कोई बाहरी शक्ति सबसे पहला काम उनमें अपनी भाषा व संस्कृति के प्रति हेय भाव उत्पन्न करने का करती है। इससे उनका अपनी भाषा के प्रति मोह और संस्कृति के प्रति गर्व तो नष्ट होता ही है उनकी एकजुटता भी खण्डित होती है।

भूमण्डलीकरण अमरीका और उसके चन्द सहयोगी देशों की साम्राज्यवादी आकांक्षाओं को ही साकार करने का एक नया उपक्रम है। इसका एकमात्र मकसद धीरे-धीरे सारी दुनियां में एक संस्कृति, एक भाषा, एक भूषा प्रचलित करने और एक जैसे विचार पैदा करने वाले मस्तिष्कों के निर्माण करने का है।

ध्यान रखें, लोक भाषाएं बचेंगी तो लोक संस्कृतियां भी बची रहेंगी। उनमें समाहित वे मूल्य भी बचे रहेंगे जो लोक को जीने की शक्ति, हर तरह की आपदा-विपदाओं से लड़ने की शक्ति और अपने आचार व्यवहार को मर्यादित रखने की शक्ति देते हैं।

डॉ. भानावत के साथ धन्य क्षण

- डॉ. भगवानदास पटेल -

लोककलाविद् डॉ. महेन्द्र भानावत और हमारा मिलन पहलीबार 1994 में भारतीय लोककला मण्डल में हुआ था जब वे वहां निदेशक थे। मण्डल के दर्शन करवाने वे स्वयं मार्गदर्शक बने थे। लोक सम्पदा से राजस्थान के आदिवासी और ग्रामीण अंचलों को लोकसंस्कृति के बहुआयामी रूप साक्षात् हो रहे थे और हम आनन्द से धन्य हो गये थे।

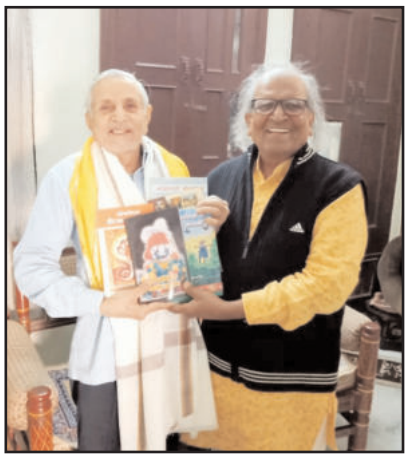

फिर 1995 में पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर द्वारा आयोजित लोकसाहित्य विषयक परिसंवाद में उनके साथ हमारी यात्रा कर्नाटक के धर्मस्थल तक हुई थी। उदयपुर की पहाड़ियों में पनपा स्नेह धर्मस्थल की नेत्रवती नदी के किनारे शिव-पार्वती के मन्दिर में देवी-देवता के सान्निध्य में मैत्री में परिणत हो चुका था। उनके साथ राजस्थानी के ख्यात कवि माधव दरक तथा लेखक पुरुषोत्तमलाल मेनारिया थे।

फिर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र दिल्ली में मौली कौशल द्वारा और बाद में आर्ट्स कॉलेज ईडर (गुजरात) में मृदुला पारीक द्वारा आयोजित लोकसाहित्य के परिसंवादों में हम और महेन्द्रजी मिलते रहे। तब हमारी मैत्री प्रगाढ़तर बनती रही। वहीं भोपाल के बसंत निरगुणे से मिलना भी सुखद रहा।

21 दिसम्बर 2022 को प्रात:काल था। मैं अपने बेटे अमित पटेल के साथ अहमदाबाद से उदयपुर आ रहा था। डॉ. कोमल कोठारी स्मृति लाइफ टाइम अचीवमेंट लोककला पुरस्कार के लिए राज्यपाल कलराज मिश्र के हाथों पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा शिल्पग्राम महोत्सव में प्रदान किया जाना था किन्तु मेरे मानस में बड़े भाईश्री भानावतजी से लम्बे अरसे बाद भेंट करने की तीव्रता थी। बेटे को कहा, पहले महेन्द्र भानावत साहब से मिलना है। कोमल कोठारी पुरस्कार की नींव में डॉ. भानावत का सहयोग है।

हम 352, श्रीकृष्णपुरा पहुंचे तो बहूरानी रंजना ने उष्मा भरा हमारा स्वागत किया। महेन्द्रजी अपनी बेटी डॉ. कहानी से मिलने गये थे जो पास में ही रहती है। समाचार पाते ही वे बढ़ती बाढ़ की तरह आये और मुझे हृदय से लगा लिया। उस समय लगा कि श्रीकृष्ण और सुदामा का प्रसंग कोरा मिथक नहीं है, जीवन का सच्चा प्रसंग है। इस प्रसंग का साक्षात्कार मुझे महेन्द्रजी ने कराया। भावावेश में शॉल एवं माला से नवाजा और अपनी पुस्तकें भेंट कीं। उनकी इस स्नेह-वर्षा में आकंठ डूबा मुझे लगा कि श्री कोमल कोठारी पुरस्कार यहीं ही मिल गया। उनके सान्निध्य में गुजारे चंद क्षण मेरे जीवन भर की थाती बन गये।

अमेरिका में बज रहा भारत का डंका

- डॉ. वेदप्रताप वैदिक -

भारतीय मूल के लगभग दो करोड़ लोग इस समय विदेशों में फैले हुए हैं। लगभग दर्जन भर देश ऐसे हैं, जिनके राष्ट्रपति, उप-राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, विदेश मंत्री वगैरह भारतीय मूल के हैं। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक तो इसके नवीनतम उदाहरण हैं। भारतीय लोग जिस देश में भी जाकर बसे हैं, वे उस देश के हर क्षेत्र में सर्वोच्च स्थानों तक पहुंच गए हैं।

इस समय दुनिया की सबसे बड़ी महाशक्ति और महासंपन्न देश अमेरिका है। अमेरिका में इस समय 50 लाख लोग भारतीय मूल के हैं। दुनिया के किसी देश में इतनी बड़ी संख्या में जाकर भारतीय लोग नहीं बसे हैं। इसके कारण भारत से प्रतिभा-पलायन जरुर हुआ है लेकिन अमेरिका के ये भारतीय मूल के नागरिक सबसे अधिक संपन्न, सुशिक्षित और सुखी लोग हैं, ऐसा कई सर्वेक्षणों ने सिद्ध किया है। यदि अमेरिका में 200 साल पहले से भारतीय बसने शुरु हो जाते तो शायद अमेरिका भी मोरिशस, सूरिनाम वगैरह की तरह भारत-जैसा देश बन जाता।

लेकिन भारतीयों का आव्रजन 1965 में शुरु हुआ लेकिन इस समय मेक्सिको के बाद वह दूसरा देश है, जिसके सबसे ज्यादा लोग जाकर अमेरिका में बसते हैं। मेक्सिको तो अमेरिका का पड़ौसी देश है। लेकिन भारत उससे हजारों कि.मी. दूर है। भारत के आप्रवासी प्रायः उत्साही नौजवान ही होते हैं। जो वहां पढ़ने जाते हैं, वे या तो वहीं रह जाते हैं या फिर यहां से अनेक सुशिक्षित लोग बढ़िया नौकरियों की तलाश में अमेरिका जा बसते हैं। उनके साथ उनके माता-पिता भी वहीं बसने की कोशिश करते हैं। इसके बावजूद भारतीय आप्रवासियों की औसत आयु 41 वर्ष है, जबकि अन्य देशों के आप्रवासियों की 47 वर्ष है।

भारत के कुल आप्रवासियों में से 80 प्रतिशत लोग कार्यरत रहते हैं। अन्य विदेशी आप्रवासियों में से जबकि 15 प्रतिशत ही सुशिक्षित होते हैं। भारत के 50 प्रतिशत से अधिक लोग स्नातक स्तर तक पढ़े हुए होते हैं। भारतीय मूल के लोगों की औसत प्रति व्यक्ति आय डेढ़ लाख डॉलर प्रति वर्ष होती है, औसत अमेरिकियों और अन्य आप्रवासियों की वह आधी से भी कम याने सिर्फ 70 हजार डॉलर होती है।

भारतीय लोगों को आप आज के दिन अमेरिका के हर प्रांत और शहर में दनदनाते हुए देख सकते हैं। अब से लगभग 50-55 साल पहले जब मैं न्यूयॉर्क की सड़कों पर घूमता था तो कभी-कदाक कोई भारतीय 'टाइम्स स्कवाएर' पर दिख जाता था लेकिन अब हर बड़े शहर और प्रांत में भारतीय भोजनालयों में भीड़ लगी रहती है।

विश्वविद्यालयों में भारतीय छात्रों और अध्यापकों की भरमार है। अमेरिका की कई कंपनियों और सरकारी विभागों के सिरमौर भारतीय मूल के लोग हैं। कोई आश्चर्य नहीं कि आज से 24 साल पहले मैंने जो लिखा था, वह भी शीघ्र हो ही जाए। ब्रिटेन की तरह अमेरिका का शासन भी किसी भारतीय मूल के व्यक्ति के हाथ में ही हो।

त्रिदिवसीय वेदांता उदयपुर वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल

(डॉ. तुक्तक भानावत)। वेदांता उदयपुर वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल का त्रिदिवसीय आयोजन 16 से 18 दिसंबर को हुआ।

राजस्थान सरकार के प्रतिनिधि अरविंद मायाराम, पुर्तगाल के एम्बेस्डर कार्लोस मार्कस, उदयपुर जिला कलेक्टर ताराचंद मीणा, वेदांता हिन्दुस्तान जिंक के मुख्य वित्तीय अधिकारी संदीप मोदी और सहर के संस्थापक निदेशक संजीव भार्गव ने श्रोताओं को संबोधित कर कार्यक्रम का आगाज किया।

प्रसिद्ध पार्श्व गायक पेपॉन ने अपने फ्यूजन बैंड के साथ बाइसा रा बीरा म्हारां पीहरिया ले चालो सा, मोह मोह के धागे तेरी उंगलियों से जा उलझे, क्यों ना हम तुम चलें टेड़े मेडे से रास्तों पे से सुर में सुर मिलाते युवाओं का जोश द्विगुणित कर दिया। यार मोहम्मद लंगा और साथियों ने सारंगी पर संगत कर राजस्थानी धुनों से विदेशी और देशी पर्यटकों को आनंदविभोर कर दिया। लोक, सूफी, पॉप के गायक जसलीन औलख ने हिमाचल, पंजाब और राजस्थान के लोक संगीत से सजी धुनों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। भारतीय संगीत बैंड परवाज ने लोक और विश्व संगीत के तत्वों के साथ साइकेडेलिक रॉक को प्रस्तुत किया। परवाज बैंड पर खालिद अहमद ने गायन और गिटार, भरत कश्यप ने गिटार, सचिन बानंदुर ने ड्रम और तालवाद्य और फिदेल डिसूजा ने बास गिटार पर साथ दिया।

लैटिन बैंड अबकोराव के 9 सदस्यों ने अपनी अनूठी ध्वनि कैरेबियन वाइब्स और साल्सा, मेरेंग्यू, बच्चा, कैरिब सन, रेगेटन, क्यूम्बिया, जैसे उष्णकटिबंधीय शैलियों के साथ पॉप और रॉक फ्यूजन की प्रस्तुति दी।

दूसरे दिन उदयपुर की वसुधा ने गिटार पर सुर छेड़े तो फतह सागर की लहरों के साथ श्रोता समुदाय भी हिलोरित हो उठा। राजसमंद के विनोद ने केसरिया तेरा और मैं तो तेरे रंग मे रंग चुका हूं गीत से समा बांधा। दिल्ली की कामाक्षी खन्ना ने इंटू द नाईट, ईफआई कुड मीट यू फोर द फर्स्ट टाईम और क्यूं है दूर तू से संगीतप्रेमियों के दिलों को छू लिया।

मांजी के घाट पर वायलिन वादक नंदिनी शंकर ने अपने सुरों से सुबह की ताजगी और गुनगुनी धूप को श्रोताओं के दिल में उतार दिया। इटली की ब्रूनो लाई और उनके साथी कलाकार की प्रस्तुति भी खूब सराही गई।

दूसरे दिन गांधी ग्राउण्ड पर सरदार खान, भावरू खान, सादिक खान, इदु खान, हबीब खान और सिकंदर खान ने अपनी धुनों का जलवा बिखेरा। पॉप से प्रसिद्ध रघु दीक्षित ने कन्नड़ गीत लोक द कालची मारूती नंती, लव यू चिन्ना, खोया है राही यहां रास्ता भी है जैसे गीत प्रस्तुत किये हर संगीतप्रेमी का दिल बाग-बाग हो उठा।

पुर्तगाल के लैटिन अरबन बैंड के संगीत को सेंजा ग्रुप ने जब मिलकर तरानों की मीठी महक घोल दी। ब्लेसिंग ब्लेड चीमागा एंड ड्रीम्स ने एफ्रो ग्रूव्स और जेज एंड सोल को गिटार के नए पीस नोट्स की आई वांट टू लीव ए गुड लाइफ और आई केन नोट लिव अलोन की नृत्य के साथ आकर्षक बंदिश संगीतप्रेमियों के दिल को छू गई।

तीसरे दिन फतहसागर की पाल पर अनुष्का मस्की ने प्रेमभरे गीत खोई, मै खोई रहूं गीत प्रस्तुत किया। अभिनेत्री संजीता भट्टाचार्य ने आउट ऑफ ट्यून, आई वार्नड यू इवन दो आई हर्ड यू हनी को बैंड के साथ यादगार धुनें छेड़ीं। इलेक्टिक फोक पॉप बैंड सूफिस्टिकेशन पर आभा हंजूरा ने बुमरो बुमरो और रोशेवाला मायने दिलबरों जैसी कश्मीरी लोक ध्वनियों और वाद्ययंत्रों के दुर्लभ और अद्वितीय लहजे को प्रस्तुत किया।

मांजी के घाट पर अमृत रामनाथ ने अपूर्वा के साथ पियानो और वायलिन पर दर्शको को मंत्रमुग्ध कर दिया। आस्ट्रेलिया के सृजनी घोष ने मेरे द्वारा खोल के बैठा तुम आ जाना भगवान, वन चले रघुराई और वैष्णव जन तो तेने ही कहिये जैसे भक्ति गीत से माहौल भक्तिमय बना दिया।

फरहान अख्तर और उनके लाइव बैंड के संगीत का जादू दर्शकों के दिल और दिमाग पर छा गया। फरहान की रॉक आन फिल्म के सिंनबाद सेलर, तरकीबें दिल जैसे धड़के धड़कने शोला जैसे भड़के भड़कने गीतों की रॉक ऑन प्रस्तुति ने गांधी ग्राउण्ड में मौजूद संगीतप्रेमियों का दिल धड़का दिया। फरहान ने मैं ऐसा क्यू हू मैं ऐसा क्यूं हूं, गाउंगा जिंदगी भर, सोचा है तो सोचो अभी को अपने बैंड के साथ धमाकेदार अंदाज में पेश किया तो दर्शक झूमने पर मजबूर हो गये।

समारोह में वेदांता टैलेंट हंट के विजेता को जिंक के अरूण मिश्रा एवं संजीव भार्गव ने सम्मानित किया। इससे पूर्व सारंगी की धुनों से राजस्थानी कलाकारों ने श्रोताओं को रसविभोर कर दिया। पुणे के वेदांग के हिप-हॉप और रैप संगीत को खूब पसंद किया। पुर्तगाल के इलेक्ट्रिक पर्क्यूशन ऑर्केस्ट्रा पर ईपीओ ताल के उपयोग के माध्यम से अफ्रीका और इसके डायस्पोरा ब्राजीलियाई, क्यूबा, वेनेजुएला, वेस्ट इंडियन संगीत के सुरों के साथ अपनी ताल मिला चुके बैंड की चैकड़ी ने वाद्ययंत्रों पर आधारित रचनाएँ प्रस्तुत की। गिटार वादक विश्वनाथ ने गिटार बजाने की उनकी अनूठी शैली और अपने गीतों को विलो गिटार पर पेश किया तो माहौल रूहानी हो गया। अल्बलुना बैंड ने प्राचीन संस्कृतियों से प्रेरित संगीत, कविता और नृत्य को प्रस्तुत कर दर्शको को झूमने के लिये मजबूर कर दिया।

भारतीय जैन संघटना का दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन

उदयपुर (ह. सं.)। 17-18 दिसंबर को भारतीय जैन संघटना का राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ। मुख्य अतिथि केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री गजेंद्रसिंह शेखावत ने कहा कि गंगा को छोड़कर देश की सभी नदियां मानसून पर निर्भर हैं। ऐसे में पानी का अंडर ग्राउंड रिसोर्स पैदा करना सुबसे बड़ी चुनौती है। सोचने की आवश्यकता है कि जमीनी स्तर पर पानी को कैसे सहेजा जाए। इस दिशा में योजना बनाकर काम करने की आवश्यकता है।

संघटना के संस्थापक शांतिलाल मुथ्था, राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेन्द्र लूंकड़, बीजेएस प्रदेशाध्यक्ष राजकुमार फत्तावत, प्रदेश महामंत्री अभिषेक संचेती, अधिवेशन के मुख्य संयोजक महेन्द्र तलेसरा, अभय श्रीश्रीमाल अध्यक्ष जीतो एपेक्स आदि उपस्थित थे।

गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने कहा कि शुद्ध जल की दिशा में गोवा में बहुत काम हुआ है। आने वाले दिनों में यहां का मॉडल देश के अन्य राज्यों में भी मील का पत्थर साबित होगा। राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष डॉ. सीपी जोशी ने कहा कि पानी को सुरक्षित रखने के लिए केवल पांच सालों की सरकारों पर निर्भरता की बजाय समाज और विभिन्न संगठन बागडोर संभालेंगे तो इसके सकारात्मक परिणाम सामने आएंगे।

राजस्थान विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया ने कहा कि यह महाराणा प्रताप की धरती है, जिन्होंने अपने संघर्ष से मेवाड़ की आन-बान और शान की रक्षा की। पन्नाधाय ने अपने पुत्र का बलिदान देकर मेवाड़ की गौरवशाली परंपरा को अक्षुण्ण बनाए रखा और उदयसिंह को बचाकर इतिहास बदला। यदि आज उदयसिंह नहीं होते तो हालात दूसरे होते।

प्रदेशाध्यक्ष राजकुमार फत्तावत ने कहा कि संगठन ने 35 वर्षों के अपने इतिहास में मुख्य रूप से आपदा प्रबंधन, सामाजिक विकास और शैक्षणिक कार्यों के सम्बन्ध में राष्ट्रीय स्तर पर कार्य किए है। संगठन का मुख्य आधार कार्यकर्ताओं का विशाल नेटवर्क है। एक लाख से अधिक कार्यकर्ता एवं 500 से अधिक विशेषज्ञ प्रोफेशनल व कर्मचारी पूना स्थित कार्यालय में कार्यरत हैं। यह अधिवेशन केवल इंवेन्ट नहीं वरन सम्पूर्ण राष्ट्र में मूवमेन्ट का कार्य करेगा। जिसमें भारत के 100 जिलों में जल संवर्धन का एमओयू, मूल्यवर्धन शिक्षा का स्केल तैयार करना तथा सामाजिक क्षेत्र के ज्वलंत मुद्दों पर चिंतन-मंथन करना मुख्य है।

समारोह में, डॉ. अभय फिरोदिया, वल्लभ भंसाली, अरूण जैन, प्रदीप राठौड़, डॉ. चेनराज जैन, विजय दरड़ा, अविनाश मिश्रा, डॉ. अख्तर बादशाह वाशिंगटन सहित देशभर के 100 से अधिक उद्योगपति, शिक्षाविद्, ब्यूरोकैट्स एवं जनप्रतिनिधि मौजूद थे।

केंद्रीय सडक और परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने वर्चुअल संबोधन में कहा कि देश में पानी की कहीं कमी नहीं है। कमी है तो नियोजन की है। अगर हम सही नियोजन से योजनाओं को धरातल पर लाएंगे तो इसके सुखद परिणाम भी सामने आएंगे।

दूसरे सत्र में गजेन्द्रसिंह शेखावत, कपिल पाटिल, गुलाबचन्द कटारिया, शांतिलाल मुथ्था, राजकुमार फत्तावत सहित सभी राज्यों के राज्याध्यक्षों ने वाटर डिक्लेरेशन का अनावरण कर उस पर हस्ताक्षर कर इतिहास रच दिया।

केन्द्रीय पंचायत राज मंत्री कपिल पाटिल ने कहा कि पानी बचाया तो जा सकता है लेकिन बनाया नहीं जा सकता है। जिन लोगों के मुंह से पानी छिन गया है उनके मुंह में पानी डालने का काम बीजेएस कर रहा है। नीति आयोग के मिशन डायरेक्टर राकेश रंजन ने कहा कि बीजेएस ने जो सरकार के साथ मिलकर बीड़ा उठाया है इसमें नीति आयोग पूरी तरह से साथ है और आने वाली हर चुनौती में संगठन के साथ खड़ा रहेगा।

सायं को वाटर रैली निकाली गई। रैली में यूथ ब्रिगेड के 51 युवा साथियों ने बुलेट पर रैली को एस्कोर्ट किया। उनके पीछे पांच घोड़े, दो बग्गियां अधिवेशन का लोगो एवं जैन प्रतीक चिन्ह लिये थी। उनके पीछे 12 राज्यों के 100 जिलों की झांकियां अलग-अलग चारपहिया वाहनों पर थीं।

दूसरे दिन संस्थापक शांतिलाल मुथ्था ने कहा कि जब हम छोटे-मोटे कार्य में साधु-संतों से आशीर्वाद लेते हैं तो इतना बड़ा अभियान साधु-संतों के सहयोग के बिना नहीं हो सकता है। ऐसे मे संघटना देशभर के साधु-संतों के अनुभवों को भी इस अभियान के साथ साझा करेगा। इस अवसर पर बीजेएस द्वारा चयनित 23 संघटनाओं का मंच पर सम्मान किया गया।

मुथ्था ने राष्ट्रीय कार्यकारिणी में अध्यक्ष पद पर राजेन्द्र लुंकड़ के नाम की घोषणा की। उसके बाद अध्यक्ष द्वारा राजकुमार फत्तावत, दिनेश पालरेचा, पंकज चौपड़ा तथा राजेश खिनवासरा राष्ट्रीय महामंत्री, संप्रति सिंघवी, सुरेश पाटिल, ज्ञानचंद आंचलिया एवं गौतम बापना राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं संजय सिंह, अनिल रांका, निरंजन जुआ जैन, डी. के. जैन, दीपक नाहर, श्रवण दुग्गड़, प्रदीप संचेती एवं डॉ. हर्षिता जैन सदस्य मनोनीत हुए। अवॉर्ड सेरेमनी में उदयपुर को ओवरऑल बेस्ट चैप्टर अवार्ड प्रदान किया गया। इस दौरान मुथ्था ने श्रेष्ठ कार्य करने पर राजकुमार फत्तावत की प्रशंसा की।

अधिवेशन में पुणे से विलास राठौड़ एवं रमेश ओसवाल, अमरावती से सुदर्शन जैन, महाराष्ट्र से हस्तिमल बम्ब, नागपुर से रजनीश जैन, यूपी से मोहित जैन, विजयकुमार जैन एवं मनोज जैन, छत्तीसगढ़ से संतोष सावा, चेन्नई से राजेंद्र दुग्गड़, उटी से धनराज तातिया, सूरत से गणपत भंसाली व राजेश जैन, एमपी से विमलकुमार जैन व दिलीप दोशी, कर्नाटक से महावीर पारिख, बेंगलुरू से ओमप्रकाश लुणावत, होसपेट से राजेंद्र बुरहट, हैदराबाद से निर्मल सिंघवी, तेलंगाना से श्रीपाल देशलहरा, लुधियाना से रिचा जैन, जयपुर से राजकुमार बाफना व पीसी छाबड़ा का चयन हुआ।

स्मृतियों के शिखर (155) : डॉ. महेन्द्र भानावत

सरोज वादन में आसमान-सी ऊंचाई लिए डॉ. आकाशदीप

उदयपुर का मेवाड़ राजघराना अपने प्रारंभिक काल से ही संगीत, नृत्य, गायन एवं वादन कला के संरक्षण, पोषण तथा पर्यालोचन का जाना-माना घराना रहा है। तब से लेकर आजतक मेवाड़ ने भारतीय संगीत जगत को जो देन दी है वह ऐतिहासिक, अनुपम तथा अमिट छाप लिए है।

इनमें सुप्रसिद्ध डागर घराने की ध्रुपद गायन शैली के उस्ताद नसरूद्दीन डागर, उस्ताद जियाउद्दीन डागर, उस्ताद जियामइनुद्दीन डागर (पद्मश्री), उस्ताद फरीदुद्दीन डागर जो भारत भवन, भोपाल के निदेशक भी रहे, सारंगी वादक पं. रामनारायण (पद्म विभूषण), तबला वादक पं. चतरलाल, बेले नृत्य के जनक उदयशंकर, करामाती लाला गिरधारी, पं. भगवानलाल जिनसे पं. जवाहरलाल नेहरू की बहिन विजयलक्ष्मी पंडित ने नृत्य सीखा।

उस्ताद हाफिज़ खां, जिनसे पं. चतरलाल ने तबला सीखा। पं. देवदत्त नादमूर्ति जिन्होंने पं. पलुस्कर तथा पं. ओंकारनाथ ठाकुर से गायन सीखा। लोकगायक चन्द्र गंधर्व जिन्होंने पहलीबार राष्ट्रपति भवन में डॉ. राजेन्द्रप्रसाद को अपनी गायकी से मुग्ध किया। ये सब अपने-अपने क्षेत्र की नामचीन हस्तियां हैं जिन्होंने भारत में ही नहीं, विदेशों तक में अपने-अपने कला-वैशिष्ट्य का परचम दिया।

इसी मेवाड़ में भैंडी बाजार गायन शैली के बेजोड़ गायक देव गंधर्व, भजन गायक पं. पन्नालाल 'पीयूष' हुए जिन्होंने आर्य समाज के माध्यम से पूरे देश में राष्ट्रीय भावधारा को प्रचारित किया। दरबारी गायिकाएं लच्छुबाई, फत्तीबाईं हुई जिनके गाये लोकगीतों की पहलीबार महाराणा भूपालसिंह ने रेकार्डें बनवाईं। भवाई नर्तक दयाराम, कठपुतली कलाकार तोलाराम हुए जिन्होंने भारतीय लोककला मण्डल के माध्यम से रूमानिया में 1965 में आयोजित हुए तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय कठपुतली समारोह में विश्व का प्रथम पुरस्कार अर्जित किया।

प्रख्यात राज शिकारी तुलसीनाथ धायभाई तथा पगड़ी बांधक भगवानजी भी तीन-तीन महाराणाओं के सेवादार रहे। आकाशवाणी की प्रथम लोकगीत गायिका नारायणीदेवी, पड़ चितेरा श्रीलाल जोशी (पद्मश्री), काष्ठ चितेरा मांगीलाल मिस्त्री, मृण-कला के मूर्ति-शिल्पी मोहनलाल कुम्हार (पद्मश्री) तथा मांडगायिका मांगीबाई ने अपनी अनवरत साधना, कठोर पुरुषार्थ तथा एकनिष्ठ लगन द्वारा जो ख्याति-कीर्ति अर्जित की उससे मेवाड़ का गौरव अक्षुण्ण बना हुआ है। इसी कड़ी में सरोद वादक डॉ. आकाशदीप ने एक होनहार एवं बेजोड़ युवा कलाकार के रूप में अपनी पहचान बनाई।

यह समय अब कई दृष्टियों से सीमित अर्थ वाला नहीं रहा। ऐसे में साहित्य, संगीत और कलाओं के प्रतिमान भी बहती हुई धारा की तरह विभिन्न प्रकार की अन्तर्ध्वनियों से बोधित हुए लगते हैं। यथार्थ भी कई आयामों वाला हो गया तो उसके उन्मेष भी नित नये प्रयोगधर्मी स्वरूप के सबब लग रहे हैं। इस बदलाव के बिना किसी कला का कोई औचित्य नहीं रह गया है।

परंपराशील भारतीय अवधारणाओं में लोक को समग्र शास्त्रों, कलाओं तथा सरोकारों का मूल आधार स्त्रोत एवं उत्स माना गया है। शास्त्र भी लोकधारा का ही संस्कारजन्य स्वरूप कहा गया है। लोक जब धूमिल होता लगता है तब शास्त्र अपनी हवा से उसे ताजगी देता है और शास्त्र जब ढीला तथा बेढ़व होने लगता है तब लोक उसका आलोक बन उसे पारदर्शी बनाता है।

लोक और शास्त्र इस दृष्टि से एक-दूसरे से विमुख या मुक्त नहीं होकर युक्त-संयुक्त हैं। जिसे हम आधुनिक, नया और प्रयोगधर्मी कहते हैं वह वस्तुतः निरन्तरता का ही परिवर्तित रूप है। इस दृष्टि से साहित्य, संगीत और कला के क्षेत्र में जितने भी पुराने-नये महारथी हुए हैं वे समय-संदर्भ के सारथी के रूप में अपने-अपने काल, युग के नैरन्तर्य होते पुरातन-आधुनिक परिवर्तन-प्रयोग के सबल सृष्टा बने हुए हैं। उन्होंने बंधीबंधाई लीक से हटकर अपनी कुशाग्र बुद्धि से नयेपन की बांक अन्वेषित करते हुए अपनी शैली में निजता की प्रतिष्ठा की।

भारतीय संस्कृति के विवेचन के संदर्भ में देखें तो यह संस्कृति सामुदायिकता, सामूहिकता और समूहजनित संस्कृति है। इसी बहुजनवादी संस्कृति से प्रभावित होकर कोई स्वतंत्रचेता व्यक्ति किसी क्लासिक रचना, धरोहर याकि विरासत को लेकर अपनी मौलिकता से उसे संवारता, संरक्षित करता पाया जाता है तो वह उसकी मौलिक दृष्टि तथा नवीन विराट होती रचना का श्रेष्ठ-उत्कृष्ट स्वरूप ही कहा जायेगा न कि उसका पुनर्पाठ, पुनर्विमर्श याकि पुनर्संयोजन।

इस दृष्टि से गोस्वामी तुलसीदास का रामचरित मानस, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का प्रिय प्रवास, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की शक्ति पूजा, रामधारीसिंह 'दिनकर' की उर्वशी, जयशंकर प्रसाद की कामायनी या फिर मैथिलीशरण गुप्त लिखित साकेत जैसी रचनाएं अपने काल एवं समय से जुड़ी होने पर भी आनेवाले कालों तक शाश्वत, सामयिक तथा अपनी प्राणवत्ता में मौलिकता की महाशक्ति बनी रहेंगी।

यही स्थिति संगीत क्षेत्र की है। सामूहिकता पर आधारित जो संगीत हमारी अनुपम धरोहर बना रहा उसी में से कुछ अश्क निकालकर हमारे संगीत-प्रवरों ने अपनी मौलिक, उदात्त एवं प्रखर प्रज्ञा से जो स्वर-संधान किया और राग के विमल कल्पद्रुम को विराग के शिखर तक पहुंचाया, वह उनकी अवधारणा का मिथक ही बन गया।

शास्त्रजनित ऐसे संगीत की यह साधना समूहनिष्ठ याकि समष्टिनिष्ठ नहीं होकर व्यष्टिनिष्ठ रही है। इस दृष्टि से हमारा शास्त्रीय संगीत व्यक्ति-प्रधान ही रहा है। अपने समूह से हटकर अलग से अपनी पहचान रेखांकित करना विवेक, विचार तथा व्यक्तित्व को उच्च धरातलीय उन्मेष दिये बिना नितांत असंभव है।

सरोद वादक डॉ. आकाशदीप ने अपनी संगीत-दृष्टि परम्पराजनित लोकसंगीत से ही विरासत रूप में अपने गांव भीण्डर (उदयपुर जिला) में दादाश्री पं. हीरालालजी से आत्मसात की जब वह उछलकूद की उम्र लिए था। इस उम्र में सीखने की गरज तो नहीं होती पर विरासती धरोहर को सेंतमेंत में ही द्रष्टाभाव से हृदयस्थ करने का अवचेतन तो चेतनामय रहता ही है। दादाजी को कभी तबला, कभी सितार, कभी नगारा तो कभी पखावज बजाते देखता तो आकाशदीप का मन भी उन जैसा सपना सजाता।

भीण्डर महाराज मानसिंहजी संगीत के बड़े शौकीन थे। उनके वहां एक-से-बढ़कर-एक गवैये और बजैये तशरीफ लाते रहते। उन सबके साथ पं. हीरालालजी ही तबला संगत करते। राजकीय संगीतज्ञ के रूप में उनका वहां बड़ा सम्मान था। उस्ताद जियाउद्दीन डागर के साथ जब आकाशदीप के पिताश्री अम्बालाल दमामी ने अपने पिता पं. हीरालालजी को संगत करते देखा तो आकाशदीप को यह जान लगा कि कठोर परिश्रम और एकाग्रभाव से यदि मेहनत की जाय तो वह भी अपने पिता-दादा की तरह अपने जीवन को महाप्राणी बना सकता है। यही भाव मन में संजोये 26 अक्टूबर 1971 को उदयपुर में जन्मे आकाशदीप का औपचारिक-अनौपचारिक शिक्षण-प्रशिक्षण होता रहा। इसमें पिताश्री अम्बालाल दमामी का ही योग अति निकटता से आकाशदीप को कारीगरीपूर्वक संवारता रहा जैसे कंघा-कांगसी अपने महीन-बारीक दांतों से एक-एक बाल को रेशम-सा बुहार देते स्वस्थ सौंदर्य की अभिवृद्धि किये रहते हैं।

पिताश्री ए. एल. दमामी ने अपनी समझ से लोकसंगीत के बहाने शास्त्रीय संगीत का गुणात्मक गहन अध्ययन करते हुए आकाशदीप के लिए सरोद वादन की राह ही निर्मित नहीं की, वह सबकुछ किया जो एक पिता अपने पुत्र को किसी क्षेत्र विशेष का वैशिष्ट्य प्राप्त करने के लिए होनहार बनाता है। यही कारण है कि अल्पवय में ही आकाशदीप ने जो ऊंचाइयां प्राप्त कीं वे बिरले ही प्राप्त कर सकते हैं।

जब स्थितियां सब प्रकार से अनुकूल होती हैं तब वैसे ही गुरुजनों का आशिष भी सहज सुलभ हो जाता है। आकाशदीप ने इस दृष्टि से जोधपुर के पं. बसंत काबरा, जो पद्म विभूषण अन्नपूर्णादेवी के शिष्य रहे, मैहर के पं. शैलेन्द्र शर्मा, पद्मभूषण शरण रानी, उस्ताद अली अकबरखां और उनके सुपुत्र उस्ताद आशीष खां का सान्निध्य प्राप्त कर संगीत के आकाश में सरोद का दीप बन अपने को प्रदीप्त किया।

डॉ. आकाशदीप ने बताया भी कि दादाजी से संगीत के गुर पाकर वायलिन और गिटार पर अंगुलियां चलाने लगा तब पिताजी ने सरोद के प्रति मेरी रूचि को परिष्कृत और परिपक्व बनाने की नकेल दी। उनकी रंगत मुझे इतनी मोहक लगी कि मैं उसी में खो गया। सरोद में तंत्रकारी, लयकारी और गायकी का समावेश ठेठ अन्तस को प्रभावित करता है। इसका सुर चौथे सप्तक तक पहुंच स्वरों के गांभीर्य और माधुर्य का इतना असर पैदा करता है कि श्रोता ईश्वरीय भक्ति-शक्ति की आनंदानुभूति को स्पर्श करता दिखाई देता है।

आकाशदीप विविधतापूर्ण तालों की गूंज, लयकारी और द्रुत में माला को संतुलित तथा आकर्षक ढंग से गुंफित करने की सिद्धता लिए है। गुरु बसंत काबरा के सेनिया-मेहर घराने की गंध सरोद के स्वरों में बखूबी मुखरित कर आकाशदीप ने विविध रागों की वैविध्यपूर्ण तानों की आकर्षक लयकारी को संतुलित अंदाज देकर लुभाया है। उसने उस्ताद अली अकबर खां निर्मित राग चन्द्रनंदन को हर मंच पर शोभित किया जो चार रागों का मिश्रण लिए है। इन रागों के अलावा दरबारी कान्हड़ा, जैजैवंती, बहादरी तोड़ी, विहाग झींझोटा, पूरिया, कल्याण जैसी रागें आकाशदीप की प्रिय रागें हैं।

राग शुद्धता, तकनीकी प्रवीणता तथा उपज अंग की मौलिकता ने उसके वादन को श्रेष्ठता प्रदान करते सैनिया मेहर घराने की अनूठी वादन शैली की सुदीर्घ परम्परा की ख्याति में अपने श्रेष्ठतम वादन, श्रेष्ठतम व्याख्यान तथा श्रेष्ठतम लेखन की त्रिवेणी से उसमें चार चांद शोभित किये हैं। उल्लेखनीय पक्ष यह भी है कि वर्तमान में मेहर घराने के जो इनेगिने सरोद वादक हैं उनमें डॉ. आकाशदीप अपनी उम्र के एकमात्र अकेले युवा सरोद वादक हैं।

भारतीय संगीत की गौरवशाली परंपरा को अक्षुण्ण रखने हेतु लुप्त होते सरोद वादन को चिर स्थायी रखने, रागमाला की बंदिशें बजाने, प्राचीन बंदिशों के साथ-साथ नई तकनीक और शैली विशेष की विशेषताओं को आत्मसात करते हुए भारतीयता का गौरववर्धन करने तथा युवा वादकों को प्रेरित करने जैसे लक्ष्यों को लेकर आकाशदीप अग्रसर है।

कला समीक्षक एवं वागेयकार पिता डॉ. ए. एल. दमामी अच्छे चित्रकार के रूप में अपनी पहचान रखते हैं। उन्हीं के योग्यतम सान्निध्य में आकाशदीप ने राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से 2006 में मैहर घराने के सरोद वादकों का वादन वैशिष्ट्य एवं भारतीय संगीत में योगदान विषय पर पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। यह शोधग्रंथ 2018 में द सरोद एण्ड सरोदिस्ट ऑफ मैहर घराना नाम से शुभम पब्लिकेशन, नई दिल्ली से छपा।

आकाशदीप प्रारंभ से ही कुशाग्र बुद्धि लिए रहा। उसने मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर से चित्रकला (1991) में तथा दिल्ली विश्वविद्यालय (1994) से सरोद वादन में एम.ए. करने के उपरांत संगीत भूषण एवं संगीत प्रभाकर की परीक्षाएं भी प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कीं। आकाशदीप ने राजस्थान संगीत नाटक अकादमी तथा राजस्थान ललित कला अकादमी से विशिष्ट सम्मान और भारत सरकार के संस्कृति तथा एचआरडी मंत्रालय तथा युनाईटेड किंग्डम चार्ल्स वालेस ट्रस्ट, लन्दन से फैलोशिप प्राप्त की।

देश के अनेक बड़े-बड़े शहरों और समारोहों में अपनी प्रस्तुति देते हुए उसने विदेशों में भी अपनी कला का परचम देकर छोटे सफर में बड़े नाम से श्रोता समुदाय को रस की उमंग में बांधा है। उसके लिए प्रगति का मैदान बहुत बड़ा है और उड़ान भरने के लिए पंख भी नाखून की तरह बढ़ने वाले हैं।

शब्द रंजन

उदयपुर, रविवार 01 जनवरी 2023

सम्पादकीय

बीता हुआ, आता हुआ समय

समय को कई रूपों में, कई अन्दाजों में, कई कोणों में, कई जुम्लों में, दार्शनिकों, वैज्ञानिकों तथा मामूली आदमियों ने विविध शिल्पियों की तरह शक्लें दी हैं। मुखौटे पहनाये हैं और अल्पजीवी, दीर्घजीवी बनाया है।

एक समय, उस समय, उनका समय, हमारा समय, वह समय, यह समय, विचित्र समय, अटपटा समय, नखराला, नटखट समय जैसे सांचों में नाना कहावती-कथनों तथा मुहावरों-मनोरथों से सींचा है।

ऐसे कितने ही समय आते-जाते रहे हैं और आगे भी उन समयों का आना-जाना होता रहेगा इसलिए बंधुओं! समय का जरा भी प्रमाद न करो।

समय ने ही सृष्टि की रचना की है। वेद-पुराण बनाये। रामायण-महाभारत की रचना करी। राम कृष्ण जैसे अनहोने दिये। महावीर बुद्ध जैसे परमहंस दिये। गुरु गोविंद दिये।

पृथ्वी, आकाश, जल, हवा, अग्नि सबमें समय की डोर खींची हुई है और सब समय की डोर में इस डोर से उस डोर होते रहे हैं।

ऐसी स्थिति में हमारी समझ की भी अपनी सीमा है। नया वर्ष कहां से, किस विध, किसलिए, क्योंकर आ रहा है और पुराना भी इसी तरह कहां लौट रहा है? क्या वही-वही, फिर-फिर पुनर्नवा बन तो नहीं आ रहा है?

नये वर्ष पर शब्द रंजन के सुधि पाठकों, लेखकों, सहयोगियों, विज्ञापनदाताओं तथा शुभेच्छुओं को हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

शब्द रंजन कार्यालय में साहित्यिक चर्चा

उदयपुर (ह. सं.)। 27 दिसम्बर को शब्द रंजन कार्यालय में गीतकार किशन दाधीच, जयपुर के ललित लेखक प्रो. गोविन्द माथुर, लोकसंस्कृतिविज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत एवं खंडवा के सुकवि प्रो. प्रताप राव 'कदम' की सहभागिता में प्रयोगधर्मी कविता, ठकुर सुहाती समीक्षा, निजताजीवी लेखनधारा पर गम्भीर चर्चा हुई।

- फोटो डॉ. तुक्तक भानावत

डॉ. विमला भंडारी सम्मानित

दिल्ली में डॉ. विमला भंडारी को उनके बाल-कथा-संग्रह 'उड़ने वाले जूते' के लिए 'साहित्य महारथी शान्ति अग्रवाल बालसाहित्य पुरस्कार 2022' से सम्मानित किया गया। मंचस्थ अतिथियों ने डॉ. भंडारी को पुरस्कार राशि 11,000 रुपए, अभिनंदन पत्र और उफरना शॉल ओढ़कर सम्मानित किया। विमला भंडारी ने कहा कि अच्छा बाल साहित्य वहीं है जिसमें बच्चों के संवेगों को नियंत्रित करने के लिए उस अनुसार विषय वस्तु हो।

पुरस्कार को प्रारम्भ करने वाली डॉ. पूनम अग्रवाल, शान्ति अग्रवाल की पुत्री ने कहा कि यह पुरस्कार प्रति दो वर्ष में दिए जाने की योजना है। अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार बालस्वरूप राही ने की। वरिष्ठ गीतकार डॉ. सोम ठाकुर मुख्य अतिथि थे। डॉ. अशोक चक्रधर तथा डॉ. मधु पंत विशिष्ट अतिथि थे। इस अवसर पर 'झमा झम झम' एवं 'धूप की गुनगुन हमें दो' का लोकार्पण भी किया गया। समारोह में डॉ. शकुंतला कालरा, बलराम अग्रवाल, रजनीकांत शुक्ल, डॉ. रमासिंह, सुमन बाजपेयी, डॉ. रवि शर्मा 'मधुप', सरिता गुप्ता, रंजना अग्रवाल, रश्मि अग्रवाल आदि उपस्थित थे। संचालन डॉ नीलकंठ कुमार और अनिल मीत ने किया।

- डॉ. पूनम अग्रवाल

मुंशी प्रेमचंद के नाटक 'बड़े भाई साहब' का मंचन

उदयपुर (ह. सं.)। वेंकटेश्वर इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी एंड मास कम्युनिकेशन ने गत क्रिएटिविटी वीक आयोजित किया गया। इसमें विद्यार्थियों ने हैंडमेड जूलरी, बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट, नृत्य, गायन एवं नाटक आदि विधाओं में भाग लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इस दौरान मुंशी प्रेमचंद के नाटक 'बड़े भाई साहब' का मंचन किया। बड़े भाई की भूमिका में हिमांशी चौबीसा और छोटे भाई की भूमिका में हीया शर्मा ने अभिनय किया। वरिष्ठ रंगकर्मी शिवराज सोनवाल ने विद्यार्थियों की प्रशंसा की। इस अवसर पर कहानी वाला रजत, आरजे काव्य, कवि कपिल पालीवाल, पत्रकार विष्णु शर्मा हितेषी, आशीष हरकावत, भजन सिंगर रजनीश शर्मा, गौरव शर्मा एवं डॉ. रिमझिम गुप्ता उपस्थिति थीं।

पोथीखाना

राजस्थान के द्वितीय भामाशाह अमरचन्द बांठिया

राजस्थान के प्रथम भामाशाह महाराणा प्रताप के महामंत्री इतिहास के साथ-साथ आमजन में भी पहचान लिये हैं। यह नाम इतना प्रचलित एवं लोकप्रिय बना कि आज दानवीर के पर्याय के रूप में वे सर्वज्ञात हैं। इन भामाशाह के बाद बीकानेर के एक और भामाशाह अमरचन्द बांठिया हुए जो बहुत कम ज्ञात, अज्ञात ही रहे। पहलीबार रतनचन्द जैन ने 'अमरगाथा अमरचन्द बांठिया' नाम से एक छोटी सी पुस्तिका लिखकर उन्हें जगजाहिर किया है।

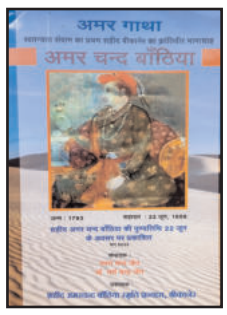

लेखक के अनुसार बांठिया गोत्र के आदिपुरुष बारहवीं शताब्दी में हुए दानवीर जगदेव पंवार थे। धन बांटने के कारण उपनाम-गोत्र के रूप में आगे जाकर बांटिया से बांठिया नाम चल पड़ा। बीकानेर के इस परिवार को ग्वालियर स्थित लश्कर इलाके में रत्नों का बड़ा व्यापार होने से नगरसेठ की पदवी से नगरसेठ के रूप में जबर्दस्त पहचान बनी। ग्वालियर महाराजा जयाजी राव इतने धनाढ्य थे कि पूरे हिन्दुस्तान में मोतीवाले राजा और उनका राजकोष गंगाजल के नाम से मशहूर था। अमरचन्द बांठिया को महाराजा ने प्रमुख कोषाध्यक्ष के रूप में नियुक्त कर दिया।

04 जून 1857 को झांसी में रानी लक्ष्मीबाई के नेतृत्व में अंग्रेजों के खिलाफ विप्लव में बिठूर का तांत्या टोपे सहायक बना। अंग्रेजी राज की सेना से मोर्चा लेने के लिए झांसी से ग्वालियर की ओर कूच किया। ग्वालियर रियासत की विद्रोही सेना ने राजमाता वैजाबाई के नेतृत्व में क्रान्ति का झण्डा फहरा दिया।

रानी तथा तांत्या टोपे की फौज के साथ राजमाता की फौज भी घोर संकट में आ गई तब बांठियाजी ने राजकोष के साथ अपने द्वारा संग्रहीत समस्त निजी दौलत भी समर्पित करदी। छल-कपट से अंग्रेजी सेना ने रानी की हत्या कर दी तब बांठियाजी ने उस वीरांगना का दाह-संस्कार करने की बहादुरी दिखाई। इस पर बांठियाजी को गिरफ्तार कर ग्वालियर के टोपी बाजार के मोड़ पर पीपल के पेड़ पर लटका फांसी दी गई पर सफलता नहीं मिलने से वहीं श्रीनाथ मन्दिर के पास नीम के पेड़ पर लटका फांसी दी गई। वहां भी देवी पद्मावती के वरदान से बच गये तब बारहेदरी भवन के पास नीम वृक्ष पर बलि दे दी। इतिहासज्ञ रतनचन्द जैन ने अनेक प्रमाणों से अमरचन्द बांठिया की अमरगाथा का बड़ा ही रोचक वर्णण किया है। शहीद अमरचन्द बांठिया स्मृति प्रन्यास, सी-242, करणीनगर, लालगढ़, बीकानेर से प्रकाशित यह पुस्तिका 24 पृष्ठ की है। सह सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन हैं।

- म. भा.

'कला वसुधा' का लोकसंस्कृति प्रसंग

प्रदर्शनकारी कलाओं की त्रैमासिकी में 'कला वसुधा' का अलग अन्दाज है। एक तो यह कि इसका प्रकाशन पिछले 22 वर्ष से हो रहा है फिर विविध क्षेत्रों में कला, साहित्य, संस्कृति के क्षेत्र में जो महानुभाव दशकों से परिपक्वता के साथ साधनामय लेखन कर रहे हैं उन्हें सलाहकार मण्डल, समीक्षा मण्डल तथा सम्पादकीय मण्डल में विशिष्टता के साथ स्थान दिया है जो 30 हैं।

एक बड़ी साइज की पत्रिका का यह संयुक्तांक 288 पृष्ठों में विविध प्रान्तों की लोकधर्मी कलाओं की प्रस्तुति से जुड़े 88 आलेख लिये है। इससे पत्रिका की लोकप्रियता और पहुंच का पता चलता है।

सम्पादिका उषा बनर्जी हर समय हर दृष्टि से शोध सामग्री से प्रामाणिकता के साथ कला वसुधा को संवारने में लगी रहती हैं। सम्पादकीय 'कहना-सुनना' के अन्त में उनका यह कथन द्रष्टव्य है-

"यह बताते हुए बहुत हर्ष हो रहा है कि पत्रिका की अपनी वेबसाइट बनाई जा रही है। पत्रिका की उत्कृष्टता के लिए तीन-तीन मण्डल गठित किये जा रहे हैं जिसमें राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान विदुषियां एवं कलाकारों को शामिल किया गया है। इतने बड़े दायित्व के साथ पत्रिका का भविष्य उज्ज्वल हो इसके लिए सभी के आशीर्वाद की आकांक्षी हूं।" (पृ. 7)

सांभीप्रिया बी-8 डिफेंस कोलोनी, तेलीबाग, लखनऊ-226029 से प्रकाशित इस अंक का मूल्य 400 रूपया है।

- डॉ. तुक्तक भानावत

अपना देश अपनी संस्कृति

हकीकतकार विश्वेश्वरनाथ पुरोहित

राजमहलों की संस्कृति आम लोगों की संस्कृति से सर्वथा भिन्न रही है। वहां सारा काम बड़े अदब और सलीके से होता रहा। इसी संस्कृति के सम्बन्ध में जानने की जिज्ञासा होने पर 16 नवम्बर 1991 को प्रो. देवकर्णसिंह राठौड़ मुझे राजपुरोहित विश्वेश्वरनाथजी पुरोहित से मिलाने उनकी हवेली ले गए।

82 वर्षीय पुरोहितजी तब बीमार रहने लगे थे। उन्होंने बताया कि वे महाराणा फतहसिंहजी के जमाने से दरबार की चाकरी में रहे। उनके पूर्वज पृथ्वीराज चौहान के पुरोहित थे। उनका पुरोहित खानदान गुरु रामजी का वंशज है। उनकी तीस पीढ़ियां मेवाड़ महाराणा उदयसिंहजी के समय से छड़ीदारों के दरोगा के रूप में अपनी सेवाएं देती आ रही हैं। महाराणा शम्भूसिंहजी के समय तथा अंग्रेजों की दखल शुरू हो गई तब इन्हें 'मास्टर ऑफ सेरेमनी' कहा जाने लगा।

पुरोहितजी ने बताया कि महाराणा की सारी दिनचर्या उनकी देखरेख में व्यतीत होती। वे ही उसके नियोजक, व्यवस्थापक और निर्देशक होते। सबकी खबर-खोज और राजवंश की परम्परा-मर्यादा का रखरखाव उन्हीं के जिम्मे रहता। कहां किसकी बैठक, किसका कितना नजराणा-निछरावल होता, उसकी समग्र जानकारी उन्हें रहती।

राजप्रासाद की पूरी संस्कृति के वे चलते-फिरते जीवन्त इतिहास-कोश ही होते। यही नहीं, हर जगह उनकी बात ही नहीं, उनका सिक्का भी इतना चलता कि यदि महाराणा साहब का कोई आदेश भी परम्परानुसार नहीं होता तो वे उसे रोकने के जिम्मेदार होते। महाराणा को कभी शिकार का या अन्य कहीं बाहर पधारना होता तो पुरोहितजी को केवल संकेत कर देते तब पुरोहितजी सारी व्यवस्था का निर्देश देते। महाराणा का नोबती अर्थात् सवारी घोड़ा कौनसा होगा, उनके साथ कितने अन्य घोड़े और हाथी होंगे; साथ में कौन-कौन सा लवाजमा होगा, व्यवस्था में कौन-कौन रहेंगे; यह सारी व्यवस्था उनको करनी होती।

उन्होंने बताया कि महाराणा के घोड़े के आगे चोबदार चलते। जलेबदार घोड़े की जीण का कोना पकड़ घोड़े के पीछे-पीछे दौड़ते-चलते। घोड़ा ठीकड़िया पकड़ता। चरवादार बलाई होते। चाबुक सवार घोड़े फेरते। यात्रा के वक्त यदि दरबार का पहना कोई आभूषण आदि नीचे गिर जाता तो वह जलेबदार का होता।

नजराणा में उमराव का पांच रूपया, सरदार का एक रूपया और पासवान्ये का एक रूपया होता। निछरावल उमराव की दो रूपया व सरदार की एक रूपया होती। एकबार भदेसर रावजी ने दो की बजाय पांच रूपये निछरावल दिये तो पुरोहितजी ने तीन रूपये अलग से पटक दिये।

एक महत्वपूर्ण घटना का जिक्र करते हुए उन्होंने बताया कि महाराणा स्वरूपसिंहजी की पासवान ऐंजाबाई को एकलिंगजी के दर्शनार्थ उनके परदादा श्यामनाथजी ले गए। लौटते समय ऐंजाबाई को जल्दी थी अत: उन्होंने लारवालों को तेज चलने को कहा। इस पर श्यामनाथजी ने टोंकते हुए उन्हें तेज चलने की बजाय धीरे चलने को कहा।

इस पर ऐंजाबाई सख्त नाराज हो गई। महाराणा को इसकी शिकायत हुई। श्यामनाथजी की पेशी पड़ी तब उन्होंने कहा, हुजुर- 'उबड़-खाबड़ रास्ते में यदि कोई दुर्घटना घट जाती तो मेरी इज्जत मिट्टी में मिल जाती।' यह कहने के उपरान्त श्यामनाथजी ने महल जाना ही छोड़ दिया और छह माह के लिए वे जगदीशजी के दर्शनार्थ जगन्नाथपुरी चले गए। वहां पांच हजार रूपया जमा कराया जिसका अटका आज तक चला आ रहा है।

पुरोहितजी ने बताया कि उनके पास ऐसी कई घटनाओं की सुखद-दुखद स्मृतियां हैं। प्रतिदिन महाराणा की दिनचर्या की हकीकत लिखने का जिम्मा इन्हीं का रहता। इसलिए वे हकीकतकार के नाम से जाने जाते हैं। बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि वीर-विनोद भी ऐसी ही हकीकत है। उसे इतिहास ग्रन्थ कहना उचित नहीं है।

- म. भा

राजस्थानी लोककलाओं का सर्वेक्षण (23)

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

लांगुरिया :

शिव तथा कैलादेवी के मेलों पर इधर जो विशाल जनसमुदाय एकत्र होता है वह लांगुरिया विषयक गीत गाकर शिव तथा देवी का महात्म्य प्रकट करता है । यह लांगुरिया कहीं देवी के गृहीत पुत्र के रूप में, कहीं शिवभक्त के रूप में तथा कहीं पति एवं परपुरुष के प्रतीक रूप में प्रकट हुआ मिलता है । मेलों के अतिरिक्त देवीधामों की यात्रा, पथवारी पूजन तथा नवरात्रा में भी लांगुरिये गाये जाते हैं। इन गीतों की लोकप्रियता के कारण लांगुरिया नाम से गीतों की विशिष्ट शैली ही बन गई । लांगुरिया विषयक दो गीतांश द्रष्टव्य हैं-

(अ) लांगुरिया तेरी धन खायलई कारे नाग लांगुरिया।
कछु खाई कछु डसलई कछु मारिये फुसकार
मा शान्ति नाग लांगुरिया ।
मा बाग तमाशे मैं गई केले-केले पै लिपट रहयौ नाग लांगुरिया।
ताल तड़ागन मैं गई साड़ी-साड़ी पै लिपट रहयों नाग लांगुरिया।
देश कीट तमाशे मैं गई गगरी-गगरी पै लिपट रहयौ
नाग लांगुरिया।

(ब) दै-दै लम्बो चौक लांगुरिया बरस दिनां में आमिंगे।
अबकै तौ हम छोरा लाए परकै बहुअल लामिंगे।
अबकै तो हम बहुअल लाए परके नाती लामिंगे ।।

जकड़ी :

ख्यालों की भांति जकड़ी भी गायकी की एक शैली विशेष रही है। इसकी बंदिशें सीधीसादी न होकर लय के विविध उतार चढ़ावों में जकड़ी हुई रहती है। इसी कारण इसका जकड़ी नाम पड़ा कहा जाता है । इसका अपना विशिष्ट कथानक होता है। इधर नौटंकियों में भी जकड़ी का प्रयोग बहुतायत से देखने को मिलता है। राजा महाराजाओं तथा वीर पुरूषों की विरूदावलियाँ इन जकड़ियों में खूब फबती हैं । कभी-कभी ख्यालों के दंगलों की तरह जकड़ी गानेवालों के भी दंगल बनजाते हैं । इसके साथ ढोलक तथा नक्काड़े बजाये जाये हैं। बांसीपहाड़पुर के ठाकुर रामसिंहजी जकड़ी गाने के प्रसिद्ध कलाकार हैं । इधर गरुड़ तथा ब्रह्मा के मेलों में इन जकड़ियों के दंगल देखते ही बनते हैं।

अलवर: 21 मई 1669

अलवर क्षेत्र मुख्यत: अलीबक्षी तथा तुर्राकलंगी ख्याल, ढप्पाली, रतवाई, रामलीला तथा गोगागीतों के लिए बड़ा प्रसिद्ध है। इन विधाओं का अध्ययन सर्वेक्षण करने में यहाँ के डॉ. जयसिंह 'नीरज' का सहयोग हमारे लिए बड़ा उपलब्धिमूलक रहा। कलाकारों को उपलब्ध कराने, उनसे मिलाने, बातचीत कराने, उनके प्रदर्शन आयोजित करवाने, रेकार्डिंग करवाने तथा हमारे यात्रा-आशय से उन्हें आश्वस्त कर उनसे अधिकाधिक सामग्री संचित करवाने में उन्होंने जो सहयोग दिया उसे स्मरण किये बिना नहीं रहा जा सकता है।

तुर्रा कलंगी :

डॉ. नीरज के साथ यहां के अलीबक्षी तथा तुर्राकलंगी ख्याल-दंगल के प्रसिद्ध ख्याल-दंगलकार कन्हैया से मिलने गये तो वे एक छोटी सी दमघुटी कोठरी में रुग्ण शैय्या पर थे। डॉ. नीरज के यह कहने पर कि अलीबक्षी तथा तुर्राकलंगी ख्यालों के संबंध में जांच पड़ताल करने के लिए ये लोग ठेठ राणाजी के देश से आपके पास आये हैं, तो बीमार कन्हैया ख्याल दंगल का नाम सुनते ही जोश में भर आया और अलीबक्षी की ठुमरी सुनाने लग गया -

रात भवन मेरे प्रांगन आयो। सोतो बगड़ इन सभी जगायो।
एरी मेरो छींको डारो तोर।। रात....
दूध दही इन सगरो खायो। माखन को घमसान बनायो।।
एरी मेरी मटकी डारी फोर।। रात....
ना कछु कहूं कहनन पाऊं। पकड़ हाथ यांकी मां लेजाऊं ।।
एरी जब रूप धरे कछु ओर।। रात....
कहे अलीबखश ना बस में आवे। चोर-चोर दध माखन खावे ।।
या को मचरह्यो घर-घर सोर।। रात....

कहने लगा, यह कृष्णलीला की ठुमरी है अलीबखश की, जबाब गुजरी को। मैंने बीच में ही बात काटते हुए पूछा-अलीबक्ष के पहले यहाँ क्या होता था ? ख्याल तमाशे कुछ तो रहे होंगे। गहरी उबासी लेता हुआ कन्हैया बोला-अलीबक्ष के पहले ख्याल होते थे। हीररंजा, बीजासोरठ, सौदागर, भक्तपूरण, गोपीचन्द, केवाट, रिसालू, हरिचंद, अनूपसिंह, लखी बणजारा, निहालदे, मोरधज, रूपवसंत, नरसींघ । ऐसे केई ख्याल होते थे । इनमें बंगले बनते थे । मैंने पूछा- बंगले कितने एक या दो? उसने कहा-बंगला तो बाबूजी एक ही बनता था जनाना सिरदार का। नीसरनी से जनाना बंगले से टेर देता हुआ राजा से सवाल-जबाब करता उतरता था। शंकरूया चाकर राजा बनता था और रानी निबाज बखश। अलीबक्ष के ख्यालों ने इनको खत्म कर दिया ।

मैंने पूछा-इन ख्यालों के पहले क्या होता था, कुछ मालूम होतो सुनाओ दिकें । पाँव लंबा करते हुए कन्हैया ने एक उबासी और खाई और कहना प्रारंभ किया, इनके पहले यहाँ दंगल चलते थे। ढपड़ा से तुर्राकलंगी गाते थे। प्रति रवि को प्रताप बांध पर इनकी रंगत जुड़ती थी। आमने सामने मैदान में दोनों दंगल जुड़जाते।

ये दंगल दो-दो रात से लेकर सात-सात दस-दस दिन रात तक चला करते थे। सबसे पहले ये खेल-दंगल यहां भूरजी उस्ताद ने प्रारंभ किये। उन्हें भगवा निशान मिला। रविवार को भूरजी का और जुम्मा के रोज कलंगी वालों का अखाड़ा होता। कलंगीवालों में नूरा और अलादीन बड़े ऊंचे कलाकार थे। ये रंगरेज थे तथा अपना कलाम चंग से पेश करते थे। ये ख्याल खड़ी, एकहरा, दोहरा, चोंग, अठंग, शेरों का झेला, जेवर का मेला, शराफा, अशर्फी आदि में अधिक चलते थे। इनकी जबर्दस्त टेक उठाई जाती थी।

कन्हैया भूरजी के शागीर्दो में से हैं। शायर गोपाल उस्ताद थे। हरिनारायण जाट ने भी कुछ अच्छे खेल लिखे हैं। लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व तुर्राकलंगी नामी दंगली प्रतियोगिता इस क्षेत्र में भाप के खेलों के रूप में प्रचलित हुई।

ढप्पाली :

दंगली गायकी के रूप में इधर ढप्पाली राग बड़ी प्रसिद्ध रही है। इस संबंध में लक्ष्मीनारायणजी भट्ट से पूछने पर ज्ञात हुआ कि इसके दल प्राय: गर्मी की फसल के बाद जुड़ते हैं। इसमें ढोल, नक्काडे और शहनाई चलती है। ये दल रात्रि को लगभग सात बजे प्रारंभ होते हैं जो प्रात: सूर्योदय तक चलते रहते हैं । ढप्पाली का एक नाम धमाल भी है । शौकिया दंगल के रूप में लक्ष्मणगढ़, गढ़ी, बिनाई, कठूमर, अखैगढ़, नगर, हरसाना, खेड़ली आदि इसके मुख्य प्रतियोगी अखाड़े रहे हैं। इस गायकी का सर्वाधिक लोकप्रिय गीत है -

पिया क्यों नहीं आये री।
क्यों नहीं आये क्यों नहीं आये वो तो बलम विदेशन धाये।।
पल-पल एक कलप सम बीतत नयन रहे जल छाये।
शैलसुता पतिता सुत वाहन बोल न जात सहाये।
पिया क्यों नहीं आये री?....

अलीबक्षी ख्याल :

अलीबक्षी ख्यालों के सम्बन्ध में और जानकारी प्राप्त करने हेतु हमने पूछताछ की तो पता चला कि यहां के कोली लोग उनके बड़े भक्त रहे हैं। अत: हम रात को कोली मोहल्ले में चले गये। यहां साठ वर्षीय वयोवृद्ध गोकुल कोली से भेंट की गई। जब हमने उनको अपना आशय बताया और कहा कि हम आप लोगों से अलीबक्षी ख्यालों के सम्बन्ध में कुछ जानने-सुनने आये हैं तो गोकुलजी ने कहा, खूब सुणो। हम अलीबक्ष के अतिरिक्त किसी का स्मरण नहीं करते ।

गोपाल अलीबक्ष का चेला था। उसका चेला कन्हैया हुआ और मैं कन्हैया का चेला हूं। अब तो न मुंह में दांत है न पेट में आंत। मैं आपको क्या सुनाऊं बाबूजी; अब शरीर वैसा नहीं रहा । दिनभर सब्जी बेच कर आया ही हूं । बहुत थक जाता हूं। अलीबक्ष के भजन हर कोई नहीं गा सकता। इन्हें गानेवालों के लिए पंसेरी-दो पंसेरी दूध चाहिये। इनके भजन मीरां सूर के भजन नहीं हैं कि बैठे-बैठे आँख मींची और तुनतुना दिये।

नक्काड़े ढोलक पर तान-में-तान और मुरकी-में-मुरकी निकालनी पड़ती है। नसें-नसें खींच जाती हैं। गोकुलजी के लड़के दौलतराम, जालम, रामगोपाल तथा कैलाश भी मिले। इन सबकी अलीबक्षजी के ख्याल गानेवालों की अच्छी पार्टी है । ब्याह शादी में ये लोग नाचते भी रहते हैं। यदा कदा ये लोग अलीबक्ष के खेल भी करते हैं। भजन तथा खेल दोनों की गायकी में अन्तर है।

गोकुलजी से जब हमने भजन सुनने के लिए कहा तो उन्होंने हमें कहा कि यदि आपको उनके भजन सुनने ही हों तो रात्रि को दस बजे ब्रह्मचारी मोहल्ले में अजाना । वहां एक रात्रिजागरण है। उनके कहे अनुसार हम लोग ठीक दस बजे वहाँ पहुँच गये। मण्डली जुड़ी। दो बजे तक अलीवक्ष के भजनों का ठाठ रहा। हमने सभी भजन रेकार्ड किये। भजन बोलने वाला खड़ा-खड़ा विविध हावभावों की अभिव्यक्ति करता है। उसके बोल चुकने के बाद नक्काड़ा ढोलक उसकी संगत करते हैं और टेरिये बारीक-बारीक तानों में भजन बुनते रहते हैं। नृत्य और संगीत दोनों ही बड़े क्लिष्ट हैं। यह साधारण आदमी के बस का काम नहीं है। मेरी समझ में और किसी भी संत भक्त के ऐसे भजन नहीं मिलेंगे जिनके साथ नृत्य संगीत और अभिनय की इतनी क्लिष्ट पैचीदगियां जुड़ी हुई मिलेंगी।

अलीबक्षी ख्यालों के प्रणेता अलीबक्ष मंडावर के रहने वाले टीकावत राजपूत थे। कहा जाता है कि अलवर नरेश मंगलसिंह के समय में मंडावर में हाथरस की एक नौटंकी आई। अलीबक्ष उसके मंच पर जाकर बैठ गये। उन्हें मंच पर बैठा देख किसी कलाकार ने व्यंग्य कसते हुए उनसे कह दिया, 'ठाकुर साहब। यह मंच तो केवल ब्राह्मणों के बैठने के लिए है। उनके सिवाय दूसरा यहाँ कोई नहीं बैठ सकता। यदि आपको मंच पर आने का गुमान हो तो अपनी खुद की नौटकी खड़ी कर दीजिए।'

अलीबक्ष के हृदय में यह बात तीर की तरह चुभ गई। तत्काल वे वहाँ से उठ रातोंरात मंडावर के पास रेणगिरि गाँव के निकट काला पहाड़ पर तपस्या में निरत गरीबदास नामक साधु के पास पहुँचे और उसे आपबीती सारी घटना कह सुनाई। साधु ने आशीर्वाद दिया और कहा कि तुम जो भी करोगे, उसमें तुम्हें सफलता प्राप्त होगी । अलीबक्ष वहाँ से चलकर अपने घर आये और लंगड़ी, चौबोल, जकड़ी, बेहर, शिकस्त, गजल एवं भजन में ख्याल-रचना प्रारम्भ कर दी।

इनके आधार पर उन्होंने ख्याल की एक मण्डली बनाई और अपने रचे हुए ख्यालों का प्रदर्शन प्रारम्भ कर दिया। धीरे-धीरे ये ख्याल जनता में इतने लोकप्रिय हुए कि वे अलीबक्षी ख्यालों के नाम से पुकारे जाने लगे। परिणाम यह हुआ कि कुछ ही समय में लोकजीवन से हाथरसी ख्यालों का नाम उठ गया और अलीबक्षी ख्यालों की रंगतें लोगों को आकर्षित करने लग गईं।

अलीबक्ष के लिखे दस ख्याल मिलते हैं जो इस प्रकार हैं-

(1) नल का बगदाव (2) नल का छड़ाव (3) पद्मावत (4) कृष्णलीला (5) फसावो आजाद (6) निहालदे (7) चंद्रावल (8) गुलकावली (9) महाराज शिवदानसिंह का बारहमासा (10) अलवर का सिफतनामा।

ये ख्याल भेंट, दोहा, सेंधू, ठुमरी तथा मांझ में लिखे मिलते हैं। ख्यालों के अलावा उन्होंने सैकड़ों भक्तिपरक भजन लिखे। राजदरबार में भी इनकी अच्छी पहुँच थी।

इन ख्यालों के लिए रंगमंच अत्यंत सादा बनाया जाता था। साधारणतया तख्ते डालकर ऊपर चंदोवा लगा दिया जाता था। दर्शक रंगमंच के चारोंओर बैठ जाते। वाद्यों में ढोलक, नक्काड़े, सारंगी, तबला, पेटी आदि मुख्य हैं। अलीबक्ष को राग-रागिनियों तथा ठुमरियों की अच्छी जानकारी थी। ठुमरियाँ लिखने में तो वे बेजोड़ थे।

- शेष पृष्ठ सात पर

बाजार / समाचार

लैंड रोवर ने डिफेंडर जर्नीज पेश किया

उदयपुर (ह. सं.)। जगुआर लैंड रोवर इंडिया ने भारत में विशेष तौर पर बनाए गए अनूठे यात्रा अनुभवों, 'डिफेंडर जर्नीज़' की पेशकश की है। यह डिफेंडर वाहनों में सेल्फ-ड्राइव के साथ कई दिनों तक चलने वाला एडवेंचर प्रोग्राम है।

जगुआर लैंड रोवर के प्रेसिडेंट और प्रबंध निदेशक रोहित सूरी ने कहा कि इसमें देश भर के कई महत्वाकांक्षी और उपभोक्ताओं की ओर से सबसे ज्यादा मांग वाले कार्यक्रमों को शामिल किया गया है। हर डिफेंडर जर्नी में उपभोक्ताओं को आरामदायक ढंग से ठहरने और शानदार मेजबानी की सुविधा दी जाएगी। इस यात्रा में उपभोक्ताओं को लाइफस्टाइल से जुड़े शानदार अनुभव मिलेंगे, उन्हें अलग-अलग जगहों की संस्कृति को जानने के साथ ही डिफेंडर का शानदार ड्राइविंग अनुभव देने वाले ऑफ-रोड ट्रेल्स के साथ भारत के कुछ सबसे प्रतिष्ठित मार्गों में ड्राइव करने का मौका मिलेगा। पहली डिफेंडर जर्नी को 'कोंकण एक्सपीरियंस' के नाम से जाना जाएगा और इसकी शुरुआत 16 जनवरी 2023 से होगी।

उदयपुर में लोकप्रिय स्विगी

उदयपुर (ह. सं.)। स्विगी की लोकप्रियता का ग्राफ लगातार ऊंचा होता जा रहा है। इस साल उदयपुर में हजारों नए ग्राहक स्विगी से जुड़े हैं। स्विगी पर उदयपुर में सबसे ज्यादा ऑर्डर होने वाली 3 डिश में मैकआलू टिक्की बर्गर, मैक्सिकन पिज्जा सैंडविच और पोहा, तीन स्नैक्स में पोहा, समोसा और दाल कचौड़ी, डेजर्ट में गुलाब जामुन, चोको लावा और चोको वोल्कैनो है। उदयपुर में सबसे ज्यादा ऑर्डर की जाने वाली डिश मैकआलू टिक्की बर्गर रही जबकि पूरे राजस्थान में ऑर्डर के मामले में समोसा नंबर 1 पर रहा। स्नैक में राजस्थान में नंबर 1 पर समोसा रहा, जबकि उदयपुर में नंबर 1 पर पोहा और उसके बाद समोसा और दाल कचौड़ी रही। उदयपुर में सबसे ज्यादा ऑर्डर होने वाला डेजर्ट गुलाब जामुन रहा जबकि पूरे राजस्थान में चोको लावा केक को डेजर्ट के रूप में सबसे ज्यादा पसंद किया गया।

भारतीय डिशेज और स्थानीय स्तर पर लोकप्रिय डिशेज की मांग सालभर देखी गई। शहर में 21,655 रुपये का एक सिंगल ऑर्डर भी देखने को मिला, जो यहां किसी एक ऑर्डर का सबसे ज्यादा बिल रहा। डिलीवरी एक्जीक्यूटिव सुमेरसिंह ने उदयपुर में सबसे ज्यादा ऑर्डर डिलीवर किए। 2022 में उदयपुर में 500 से ज्यादा रेस्टोरेंट स्विगी पर लिस्टेड रहे। स्विगी के साथ जुडक़र पूरे राजस्थान में 4500 से ज्यादा एक्टिव रेस्टोरेंट और अन्य भोजनालय अपने कारोबार को विस्तार दे रहे हैं।

जेके टायर का 2050 तक कार्बन नेट जीरो बनने का लक्ष्य

उदयपुर (ह. सं.)। ग्रीनेस्ट कम्पनी बनने के मिशन के साथ जेके टायर ने वर्ष 2050 तक कार्बन न्यूट्रल बनने का लक्ष्य निर्धारित किया है। जेके टायर के लिये स्थायित्व की यात्रा वर्षों पहले शुरू हुयी थी तथा अटूट फोकस के साथ अनेक उपलब्धियां हासिल कर चुकी है।

जेके टायर एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड के चेयरमैन एण्ड मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. रघुपति सिंघानिया ने कहा कि कंपनी का ध्यान नवीकरणीय स्रोतों के साथ ऊर्जा जरूरतों को प्रतिस्थापित करने पर काम करना है। इस दिशा में जेके टायर कोयले की जगह अन्य स्रोतों के माध्यम से अपनी उचित मात्रा में तापीय ऊर्जा की आवश्यकता को पूरा कर रहा है। इन सभी प्रयासों से इसकी प्रक्रियाओं में कार्बन उत्सर्जन में काफी कमी आई है और सबसे ग्रीनेस्ट कंपनी होने के लक्ष्य को पूरा करने के लिए पिछले 8 वर्षों में उत्सर्जन की तीव्रता को लगभग 57 प्रतिशत तक कम करने में सक्षम बनाया गया है। जेके टायर अब दुनिया में सबसे अधिक ऊर्जा कुशल टायर निर्माताओं में से एक है।

जिंक फुटबॉल अकादमी ने हीरो अंडर-17 यूथ कप के राउंड 16 के लिए क्वालीफाई किया

उदयपुर (ह. सं.)। जिंक फुटबॉल अकादमी ने गोवा में प्रतिष्ठित हीरो अंडर-17 यूथ कप के राउंड 16 के लिए क्वालीफाई करने के लिए शानदार प्रदर्शन किया

है। कुछ सर्वश्रेष्ठ भारतीय युवा टीमों के साथ ग्रुप जे में शामिल जिंक फुटबॉल अकादमी ने शुरुआती दौर में बेंगलुरू एफसी को 2-0 से हराया, इसके बाद चर्चिल ब्रदर्स एफसी को 3-0 और एआरए एफसी गुजरात को 3-0 से हराया। एफसी गोवा के खिलाफ मैच वाला समूह खेलना बाकी है।

वेदांता-हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड का सीएसआर हस्तक्षेप जिंक फुटबॉल अकादमी अब तक 8 गोल कर नाबाद है और सभी मैचों में क्लीनशीट रखता है। अक्षत मेहरा 3 गोल के साथ शीर्ष स्कोरर हैं जबकि सुभाष डामोर ने 2 गोल किए हैं। उदयपुर स्थित टीम ने 3 मैचों से सभी 9 उपलब्ध अंक हासिल किए हैं और एक जनवरी को एफसी गोवा के खिलाफ अपना अंतिम ग्रुप मैच खेलेगी, जिसके 4 अंक हैं।

सुविवि के दीक्षांत समारोह में झाझरिया एवं मेवाड़ को डी.लिट् की मानद उपाधि

उदयपुर (ह. सं.)। 20 दिसंबर को मोहनलाल सुविवि का दीक्षांत समारोह कुलाधिपति एवं राज्यपाल कलराज मिश्र के सान्निध्य में आयोजित हुआ जिसमें 107 गोल्ड मेडल और 187 पी.एचडी. डिग्रियों का वितरण किया। इस दौरान भारतीय पैरालंपिक खिलाड़ी देवेंद्र झाझरिया एवं पूर्व राजपरिवार के सदस्य लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ को डी. लिट् की मानद उपाधि प्रदान की गई।

कुलाधिपति ने कहा कि विश्वविद्यालय शिक्षण में नवाचारों का संवाहक बने क्योंकि नवाचारों का अर्थ है शिक्षा को और अधिक अर्थवत्ता प्रदान करना। आज के दौर में शिक्षा में नवाचार किए जाने की आवश्यकता है, जिससे विद्यार्थियों में पढ़ाए जाने वाले विषय के प्रति उत्साह जागृत हो सके। मुख्य वक्ता महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के पूर्व कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्रा थे।

देवेंद्र झाझरिया ने कहा कि मेहनत का परिणाम कभी तत्काल नहीं मिलता। उसके लिए बहुत सारे धैर्य की आवश्यकता होती है। इसलिए युवा वर्ग अपना लक्ष्य निर्धारित करें और उसी पर अपना ध्यान केंद्रित करें तो सफलता निश्चित मिलेगी। लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ ने कहा कि उदयपुर में, घर में अपना सम्मान होना उनके लिए गौरव का विषय है। यह मेरा नहींबल्कि उस हर युवा का सम्मान है जो समाज सेवा से जुड़ा हुआ है।

समारोह में कुल 88 गोल्ड मेडल, 8 चांसलर गोल्ड मेडल तथा 11 स्पॉन्सर मेडल प्रदान किए गए। विभिन्न संकायों में 187 पीएच.डी. डिग्रियां प्रदान की गई।

प्रारंभ में कुलपति प्रो. आईवी त्रिवेदी ने सभी का स्वागत करते हुए विश्वविद्यालय की साल भर की गतिविधियों एवं उपलब्धियों की जानकारी दी। संचालन रजिस्ट्रार छोगाराम देवासी ने किया। समारोह पश्चात राज्यपाल ने कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर के नए भवन का उद्घाटन, इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंजीनियरिंग की वर्कशॉप, लेबोरेट्री और स्पोर्ट्स एकेडमी भवन का शिलान्यास किया।

आकर्षक परिधानों में महिलाओं का रैम्प वॉक

उदयपुर (ह. सं.)। 18 दिसंबर को आयोजित मिसेज इंडिया गॉडेस पेजेंट में बॉलीवुड अभिनेत्री रिमी सेन, मधुकमल मोशन पिक्चर्स के संस्थापक मेहर अभिषेक, निदेशक मधुकमल मोशन पिक्चर्स रूश्मि डाके, रमाडा रिजॉर्ट एंड स्पा उदयपुर के निदेशक सुनील तलदार एवं श्रीमती डॉली तलदार, फर्स्ट हाउते ट्रेंडी ज्वैलरी के निदेशक, सुहास मालवीय ने महिलाओं का उत्साहवर्धन किया। फैशन शो की थीम पर्यावरणीय स्थिरता और महिला सशक्तिकरण हेतु समिर्पित थी।

क्लासिक केटेगरी में सोनल अरोरा विजेता, डॉ. चिंतन चौधरी उप विजेता एवं समेधा सिलवान्कर द्वितीय उपविजेता रही। रॉयल केटेगरी में पल्लवी चौपड़ा विजेता, वाटिका नोरियाल उपविजेता एवं बबीता वर्मा द्वितीय उपविजेता रही। एलीट केटेगरी में अंजू गुप्ता विजेता रही। इसके अलावा 50 वर्ष से अधिक की उम्र की महिलाओं को प्रोत्साहित करने के लिए विशेष अवार्ड प्रदान किया गया। कार्यक्रम की कोर्डिनेटर मृणाली वानखड़े थी।

मंच के माध्यम से आमजन को पृथ्वी पर उपलब्ध संसाधनों के सही और रिसायकल कर उपयोग बारे में जागरूक किया। महिलाओं ने संदेश दिया कि आने वाली पीढ़ियों के लिये पर्यावरण का सरंक्षण महत्वपूर्ण है ताकि उन्हें शुद्ध हवा, पेयजल और उपजाऊ जमीन की विरासत मिल सकें।

मिसेज इंडिया द गॉडेस पेजेंट का आयोजन रमाडा स्पा एंड रिसॉर्ट्स में किया गया जिसमें महिलाओं को पांच दिनों का प्रशिक्षण दिया गया। यह कार्यक्रम विवाहित भारतीय महिलाओं के लिए था जो सौंदर्य, अनुग्रह, प्रतिभा, बुद्धिमत्ता, गौरव और करुणा का उदाहरण हैं। मधुकमल मोशन पिक्चर्स द्वारा इस फैशन शो का आयोजन का उद्धेश्य ऐसी महिलाओं की प्रतिभा को मंच प्रदान करना है जो विश्व में अपने प्रतिनिधित्व में आत्मविश्वासी, शालीन, शिष्ट, करिश्माई और सम्माननीय पहचान की महत्वकांक्षा रखती हैं। आयोजन के हॉस्पिटैलिटी पार्टनर रमाडा स्पा एंड रिजॉर्ट उदयपुर, प्रायोजक अर्थ डायग्नोस्टिक्स थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में ग्रूमिंग विशेषज्ञ मैस्करेनहास इंटरनेशनल के कार्ल और अंजना कोरियोग्राफर पूजा सिंह, जुम्बा प्रशिक्षक अजय लोखंडे, योग और इमेज कंसलटेंट मनीषा और रूपाली ब्रांड एंबेसडर लेफ्टिनेंट कर्नल हिमांशी सिंह, डॉ. रश्मि गोया एवं डॉ. सुकेशनी अग्रवाल ने सक्रिय एवं महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया।

जेटीएन का राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न

उदयपुर (ह. सं.)। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के सोशियल मीडिया प्रचार-प्रसार उपक्रम जेटीएन का षष्ठम सम्मेलन आचार्यश्री महाश्रमण के सानिध्य में आयोजित किया गया। आचार्यश्री ने कहा कि ऐसा प्रतीत होता है की जेटीएन से निकली सामग्री प्रमाणिक होती है।

अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा की अध्यक्षता में आयोजित अधिवेशन में उपाध्यक्ष जयेश मेहता, महामंत्री पवन मांडोत, संगठन मंत्री श्रेयांश कोठारी, जेटीएन कार्यकारी संपादक अभिषेक पोखरना ने देशभर से आए प्रतिनिधियों का स्वागत किया। अभिषेक पोखरना ने बताया कि पहले दिन आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में मंचीय कार्यक्रम, पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमार एवं मुनि नय कुमार द्वारा प्रतिनिधियों को उत्साहवर्धक प्रेरणा, डिजिटल मार्केटिंग पर राशिका द्वारा प्रशिक्षण एवं भक्ति संध्या में गायक पंकज भंडारी ने भक्ति गीतों से लोगों को आनंदित किया। दूसरे दिन भारतीय वायुसेना के विंग कमांडर चेतन जैन, प्रसिद्ध मोटिवेशनल स्पीकर नीलेश संचेती ने 'कैसे बने विशिष्ट कार्यकर्ता' पर वक्तव्य एवं नरेश जांगिड़ ने ग्राफिक डिज़ाइन पर प्रशिक्षण दिया।

अधिवेशन में देशभर के 70 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया जिनका प्रशस्ति पत्र से सम्मान किया गया। जेटीएन विशेषकर तेरापंथ धर्मसंघ के केंद्रीय सूचनाओं के साथ-साथ देश-विदेश में पदयात्रा करने वाले साधु-साध्वियों, समणियों के विशेष प्रवचनों, विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित संघीय कार्यक्रमों का ऑनलाइन माध्यम से प्रचार प्रसार करता है।

राजकुमार जैन 'राजन' सम्मानित

उदयपुर (ह. सं.)। राजस्थान मीडिया एक्शन फोरम द्वारा विज्ञान समिति सभागार में 17 दिसंबर को वरिष्ठ पत्रकार डॉ. भंवर सुराणा की स्मृति में मीडिया विमर्श एवं विभूति सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

इस अवसर पर आकोला के साहित्यकार राजकुमार जैन 'राजन' को बाल साहित्य लेखन, संपादन, प्रकाशन व उन्नयन के क्षेत्र में महनीय योगदान के लिए अंग वस्त्र, स्मृति चिन्ह एवं

अभिनन्दन पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। राजन ने कहा कि साहित्य सृजन और पत्रकारिता किसी भी समाज की संस्कृति का एक अभिन्न अंग माना जाता है। आज रचनाकार की मानसिकता बदल रही है। उसके पास अनेक विचार हैं, इसलिए लेखन में वे एक तरह की आइडियोलॉजी से बंधे हुए नहीं हैं। रचनाकारों की कोशिश यह देखने की होनी चाहिए कि साहित्य के दर्पण में हमारा आज का समाज कैसा दिख रहा है, आने वाले वक्त के कैसे संकेत मिल रहे हैं?

इस अवसर पर दिनेश दीवाना (भीलवाड़ा), मनोज शर्मा (जयपुर), मंज़र गोरखपुरी (नई दिल्ली), डॉ.राखीसिंह कटियार (बड़ौदा), डॉ. कनक लता गौर (कानपुर), रविंद्रसिंह (मुंबई), सोनिया 'अक्स' (पानीपत), शिवम झा 'कबीर' (नई दिल्ली) एवं उदयपुर के राजेश भाटिया, पुष्पासिंह, डॉ. मनोज जैन, डॉ. आनंद गुप्ता एवं डॉ.श्रद्धा गट्टानी को भी सम्मानित किया गया।

अध्यक्षता अनिल सक्सेना ने की। मुख्य अतिथि डॉ. आई. वी. त्रिवेदी, अति विशिष्ट अतिथि दुलाराम सहारण, डॉ. अजीतकुमार कर्नाटक, शिवसिंह सारंगदेवोत, डॉ. विपिन कुमार थे। बीज वक्तव्य डॉ. उरुक्रम शर्मा ने जबकि संचालन शकुंतला सरूपरिया ने किया।

मैंने नहीं जाना

-डॉ. उषा वर्मा-

प्यार का गागर छलककर
कब समंदर बन गया
मैंने नहीं जाना।
मौजे दरिया कब किनारा बन गया
मैंने नहीं जाना।
जिन्दगी तो तल्खियों में कैद थी
न अपने थे न घर था न मकां
एक घरौंदा प्यार का कब बन गया
मैंने नहीं जाना।
हाथ में ले हाथ जब तुम चल पड़े
जैसे तुफां में दीया इक जल गया।
पतझड़ जाने कब गुलिस्ता बन गया
मैंने नहीं जाना।
गम के मारों को हंसाने के लिए
मैंने गिरवी रख दी अपनी जिन्दगी
दोस्ती कब हो गई भगवान से
मैंने नहीं जाना।
प्यार का गागर छलककर
कब समंदर बन गया
मैंने नहीं जाना।

कहावतों के कहकहे (18)

(156) राम नाम जपणो नै परायो माल आपणो
(157) दुरपे जले वचे हुवा
(158) खरच रौ भाग मोटो है
(159) भाग फाटी नै तीन दन व्हिया
(160) हूतो-हूता हात कोस चालै
(161) देखां ऊंट कणी कड़ बैठे
(162) वाण्यो व्है परधान तो वणै न वणावै
ठाकर व्है परधान तो भाले भोम खरावै
बामण व्है परधान तो मांगे नै मंगावै
(163) ठगाया ठाकर वाजै
(164) जुर जायक नै पामणो चोथो चिट्ठीदार
लाप्पण तीन कराय दो फेर न आवै द्वार
(165) पटेल रो पाड़ो मरै जदी गाम बैठवा जाय
पटल मरे जदी कोई नीं जाय

नववर्ष पर डॉ. पूरन सहगल द्वारा समय-समय पर भेजी गई काव्य-पंक्तियां

ढेर सारे वादे किये थे, सब अधूरे रह गये।
आप भी कह दीजिये, वे कह गये सो कह गये।।
आइये, आपका स्वागत बहुत, नव वर्ष जी।
हम सहेंगे आपको भी, जैसे उनको सह गये।। (1990)

खूब हो उत्कर्ष, नूतन वर्ष मंगल कामना,
जीवंत हो संघर्ष, नूतन वर्ष मंगल कामना।।
यदि नहीं संघर्ष जीवन में, तो जीवन क्या जिया,
सुगम हो संघर्ष, नूतन वर्ष मंगल कामना।। (1995)

फाग फरक कंवरास ग्यो, चेत हुओ चेतन्न।
कुंपराया सब झाड़क्या, मन चत है परसन्न।।
रित वसंत संवत्सरो, वंदौ विक्रम मास।
सरसे सुख, आभस वधे, जस की उड़े सुवास।। (2006)

डॉ. हुकमसिंह भाटी को 'टैसीटोरी श्री' सम्मान

जोधपुर (ह. सं.)। राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी के पूर्व निदेशक डॉ. हुकमसिंह भाटी को राजस्थान आर्कियोलॉजी एंड एपिग्राफी कांग्रेस की ओर से 'टैसीटोरी श्री' सम्मान ने नवाजा गया। डॉ. भाटी ने अपनी 50 वर्ष की सुदीर्घ शोधयात्रा के दौरान केन्द्र सरकार की अनेक योजनाओं के माध्यम से राजस्थानी भाषा साहित्य के ऐतिहासिक ग्रंथों की खोज, सर्वेक्षण, परिरक्षण, सम्पादन के अतिरिक्त इतिहास लेखन के मौलिक कार्य में अपनी दक्षता का परिचय दिया। उनकी 75 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। राजपूत राजवंशों का ही नहीं बल्कि ओसवाल, ब्राह्मण, चारण, पंचोली, नाथ, संत, भक्त आदि अनेक विषयों पर शोधकार्य को एक नया आयाम प्रदान किया। सम्मान हनुमानगढ़ में प्रदान किया गया।

थोरेकोस्कॉपी तकनीक से गाँठ का सफल उपचार

उदयपुर (ह. सं.)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पिम्स) हॉस्पिटल, उमरड़ा में चिकित्सकों ने एक रोगी का बिना ऑपरेशन के थोरेकोस्कॉपी तकनीक द्वारा छाती में भरे तरल पदार्थ व गाँठ का सफल उपचार किया है। पिम्स के चैयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि 57 वर्षीय मरीज को श्वांस फूलने, सीने में दर्द, बुखार और खांसी की शिकायत के चलते पिम्स हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया। जांच में पता चला कि छाती में हेमोरेजिक तरल पदार्थ व गाठें हैं। इस पर टी.बी चेस्ट एवं रेस्पिरेट्री मेडिसिन के प्रमुख डॉ. अब्दुल वहाब, डॉ. सानिध्य टांक, डॉ. ऋषभ अग्रवाल, डॉ. प्रान्शु कुमार, डॉ. अर्पित, डॉ. गुरमेहर और थोरेकोस्कॉपी टेक्निशियन गिरिराज व दिनेश की टीम ने दूरबीन द्वारा 3 लीटर हेमोरेजिक तरल पदार्थ व गाठें निकाल मरीज का सफल उपचार किया। मरीज अभी स्वस्थ है।

राजस्थानी लोककलाओं.....

(पृष्ठ पांच का शेष)

मुख्यत: उनकी कृष्ण विषयक लिखी गई ठुमरियों का अधिक प्रचार हुआ। इनकी तर्जे लोगों में इतनी लोकप्रिय हुई कि अन्य ख्याल- लेखकों ने भी उनके आधार पर ख्याल लिखे।

अलीबक्ष के शागिर्दों में घींसा नाई, घींसा मोची, घींसा बनिया, मारणो कापड़ी, पिरभू ठाकुर, फइम मुजावर, गनी मुजावर तथा लालजी पुजारी प्रमुख थे। अलीबक्ष के एक लड़का तथा एक लड़की थी। लड़के का नाम मीरुखां तथा लड़की का नाम अपन था। ऐसा कहा जाता है कि उनकी मृत्यु के पश्चात अलवर नरेश जयसिंहजी ने 'अपन' को अपनी राखीबंध बहिन बनाया। 1956 के फाल्गुन माह में लगभग 45 वर्ष की अवस्था में उनकी मृत्यु हुई।

रतवाई :

यहां की कला भारती के श्री विष्णुजी शर्मा के सहयोग से रतवाई विषयक जानकारी के लिए पुनिया मेव से भेंट की गई। रतवाई संबंधी जानकारी देते हुए पुनिया ने कहा, रतवाई गजली किस्म का गीत है । पुरूषों और स्त्रियों की जुदा-जुदा रतवाईयाँ होती हैं। इनको गाने में बुलन्दगी तथा जोश-होश चाहिये। इसके लिए प्रसिद्ध है कि इन्हें गाने वाली औरतों का कभी गर्भपात नहीं होता। अक्सर ये मेलोंठेलों में सारंगी के साथ रात रात भर गाई जाती हैं।

बात कहने में भी ये लोग बड़े पटु होते हैं। इन बातों में गोपीचन्द तथा पांडवों की बातें मुख्य हैं । इधर रेबारी लोग भी ऊंटों पर यात्रा करते हुए ऊंट की घंटी की मधुर टनटनाहट के साथ लम्बी-लम्बी रागों में रात-रात भर गाते हुए अपना मार्ग हल्का करते हैं। गोगा नवमीं पर इधर गोगा गाने वाले भी हैं।

रामलीला :

श्री भागीरथ भार्गव के सहयोग से यहाँ के रामलीला अखाड़ेवालों से भी हमारा मिलना हुआ। सर्वप्रथम सन् 1916 में मुखिया श्री जयनारायणजी भार्गव ने तुलसी कृत रामायण के आधार पर यहां रामलीला प्रारंभ की परन्तु बाद में इसमें राधेश्याम वाल्मीकि तथा हरिऔध की रामायण के सम्मिलित रूप के आधार पर अलग रामलीला तैयार की।

रामलीला के अतिरिक्त राधेश्याम कथावाचक, मुरारीलाल तथा आगा श्रीकृष्ण के लिखे नाटक भी प्रदर्शित करते हैं। इस लीला पर पारसी थियेटर का अधिक प्रभाव पाया जाता है।

अलवर से हम जयपुर आये। हमारी इस शोध-सर्वेक्षणयात्रा का यह अंतिम पड़ाव था। यहाँ राजस्थान विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं सुप्रसिद्ध लोकसाहित्य विशेषज्ञ डॉ. सत्येन्द्र से भेंट कर अपने अब तक के किये हुए सर्वेक्षण से उन्हें अवगत कराया तथा लोक संस्कृति विषयक अन्य कई महत्त्वपूर्ण पहलूओं पर वार्ता-विमर्श किया। वार्ता के दौरान पता लगा कि यहाँ के हिन्दी विभाग की ओर से भी लोकसंस्कृति विषय कुछ लघुप्रबंध लिखे गये हैं।

कार्यालय से उनकी सूची प्राप्त की गई। इनमें भारत के, प्रमुखत: राजस्थान के विविध अंचलों की लोकवार्ता विषयक सामग्री पर खासा प्रकाश डाला गया है। इनमें से कुछ प्रबंध मैंने देखे तथा कुछेक जल्दी-जल्दी में पढ़े भी। विश्वविद्यालय को इनके प्रकाशन की भी व्यवस्था करनी चाहिए ताकि यह सामग्री प्रकाश में आये जिससे एक लाभ तो यह होगा कि जो कार्य अब तक हो चुका है उसकी पुनरावृत्ति होने से बचा जासकेगा। दूसरा यह कि अन्य जिन-जिन प्रांतों की मुख्य-प्रमुख विधाएँ अछूती रह गई हैं उन पर आगे कार्य करने वाले को प्रेरणा, बल एवं सहयोग मिलेगा।

राजस्थान विश्वविद्यालय में लोकसंस्कृति के विविध पहलुओं से सम्बन्धित जो लघुप्रबन्ध प्रस्तुत किये गये उनकी सूची इस प्रकार है-

(1) राजस्थानी वात साहित्य में समाज चित्रण -कैलाशनारायण शर्मा
(2) ढोलामारू रा दूहा : एक विवेचन -कृष्णबिहारी सहल
(3) मारवाड़ी लोकगीतों में प्रणयभावना के विविध रूप -मदनमोहन शर्मा
(4) राजस्थानी नारी लोकगीतों में प्रकृति वर्णन -विश्वनाथ शर्मा
(5) राजस्थानी नारी लोकगीतों में भक्ति की विविध धाराएँ - जगदीशप्रसाद गुप्ता
(6) राजस्थान के वर्षा सम्बन्धी लोकगीत का -चित्रलेखा
(7) ब्रजलोकगीतों में कृष्ण का चरित्र -उषारानी तिवारी
(8) भरतपुर क्षेत्र के लोकनृत्य गीत- शिवप्रसाद अग्रवाल
(9) आगरा जिले के वैवाहिक लोकगीत - शशिबाला खंडेलवाल
(10) कश्मीरी तथा हिन्दी लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन - उषा श्रीमाली
(11) राजस्थान के प्रमुख लोकदेवताओं विषयक लोकसाहित्य (जयपुर के विशेष संदर्भ में) - विनोदकुमार शर्मा
(12) राठी मेवाती कृषक शब्दावली - सत्यनारायण चेजारा
(13) कन्नोजी के वैवाहिक गीत - प्रतापसिंह नरूका
(14) बाबा रामदेव सम्बन्धी लोकसाहित्य कंपन - हुकुमसिंह 'नवीन'
(15) राजस्थान के व्रत लोकगीत- कान्ताकुमारी दीक्षित
(16) राजस्थानी पहेलियाँ -सोनाराम विश्नोई
(17) स्त्रियों के तीज तथा गणगौर पर गाये जाने वाले जयपुर क्षेत्रीय गीत - हेमलता माथुर
(18) करौली क्षेत्र के मीणा जातीय लोकगीत - जयपाल मीणा
(19) जयपुर क्षेत्र के होली-दीपावली के गीत - अरूणा शर्मा
(20) अहीरवाटी लोकगीत : एक मूल्यांकन - श्यामसुन्दर शर्मा
(21) शेखावाटी के कृषक जीवन से सम्बन्धित लोकगीत - सुशीलाकुमारी
(22) जयपुर के वैवाहिक लोकगीत -रूक्मणी वैश्य
(23) अलवर अंचल के लोकगीतों का साहित्यि तथा सांस्कृतिक मूल्यांकन - रामजीलाल
(24) शेखावाटी बोली की वार्ताएं -मूलचन्द आर्य
(25) जयपुरी व्रत लोकसाहित्य- गजानंद मिश्र
(26) करौली क्षेत्र के ख्याल साहित्य का अध्ययन -कल्याणप्रसाद वर्मा
(27) मालपुरा क्षेत्र में प्रचलित चारण चरजाएं और उनका अध्ययन -गुलाबदान
(28) राजस्थान के अलीबक्षी ख्याल -जीवनसिंह राजपूत
(29) तहसील फागी की कृषि शब्दावली का भाषावैज्ञानिक अध्ययन -गोपालसिंह राजावत

- समाप्त

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

4 वर्ष

जनसेवा, सबका सम्मान
आगे बढ़ता राजस्थान

सेवा ही कर्म, सेवा ही धर्म

"राज्य की संवेदनशील, पारदर्शी एवं जवाबदेह सरकार के सफल 4 वर्ष पूर्ण होने पर, मैं सभी को हार्दिक बधाई देते हुए प्रदेशवासियों की खुशहाली, सुख-समृद्धि, स्वस्थ जीवन और चहुंमुखी विकास की कामना करता हूं। आइए, हम सब मिलकर राजस्थान के चहुंमुखी विकास के लिए पूरी निष्ठा एवं संकल्पबद्धता से अपने कदम बढ़ाएं और मन, वचन व कर्म से इसमें सहभागी बनकर अपनी भूमिका निभाएं।"

अशोक गहलोत
मुख्यमंत्री, राजस्थान

मॉडल स्टेट राजस्थान

मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना

₹10 लाख का कैशलेस स्वास्थ्य बीमा एवं ₹5 लाख का दुर्घटना बीमा। अब तक 27.60 लाख मरीजों को ₹3195 करोड़ का निःशुल्क इलाज।

ओल्ड पेंशन स्कीम

1 जनवरी 2004 से नियुक्त हुए सभी सरकारी कर्मचारियों को पूर्व पेंशन योजना (ओपीएस) लागू।

सरकारी नौकरी

1.36 लाख सरकारी नौकरी दी गई। 1.21 लाख सरकारी भर्तियां प्रक्रियाधीन। 1 लाख अतिरिक्त पदों पर भर्ती प्रस्तावित।

इंदिरा गांधी शहरी रोजगार गारंटी योजना

शहरों में 100 दिन के रोजगार की गारंटी। अब तक 3 लाख 50 हजार जॉब कार्ड जारी।

राजीव गांधी ग्रामीण ओलम्पिक खेल

दुनिया का सबसे बड़ा खेल आयोजन। लगभग 30 लाख लोगों ने लिया भाग। शहरी ओलम्पिक खेल 26 जनवरी, 2023 से। ये खेल प्रतिवर्ष आयोजित होंगे।

पालनहार योजना

अनाथ एवं अन्य पात्रतानुसार बच्चों को प्रतिमाह ₹500 से ₹2500 की आर्थिक सहायता। अब तक 6 लाख 64 हजार बच्चे लाभान्वित।

राजीव गांधी स्कॉलरशिप फॉर एकेडमिक एक्सीलेंस

प्रतिवर्ष 200 बच्चों की विदेश में पढ़ाई का खर्च सरकार द्वारा वहन।

महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूल

राज्य में 1670 अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में गुणवत्तायुक्त शिक्षा।

बालिकाओं को स्कूटी वितरण

स्कूल व कॉलेज जाने वाली 20,000 बालिकाओं को प्रतिवर्ष स्कूटी का वितरण।

मुख्यमंत्री निःशुल्क यूनिफॉर्म वितरण योजना

राजकीय विद्यालयों के कक्षा 1 से 8 तक के विद्यार्थियों को यूनिफॉर्म के दो सैट निःशुल्क।

मुख्यमंत्री बाल गोपाल योजना

राजकीय विद्यालयों के कक्षा 1 से 8 तक के विद्यार्थियों को हर मंगलवार व शुक्रवार को दूध वितरण।

टेक्नोलॉजी से विकास

यूनीक आईटी इंस्टीट्यूट-राजीव गांधी फिनटेक डिजिटल इंस्टीट्यूट, जोधपुर।

मेडि-टेक, क्लाइमेट टेक एवं एग्रीटेक आदि की उन्नत तकनीकों पर रिसर्च के लिए-राजस्थान इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड लर्निंग, जयपुर।

स्टार्टअप्स के लिए प्लग एंड प्ले फेसिलिटी-जयपुर, जोधपुर एवं कोटा में राजीव गांधी नॉलेज इनोवेशन हब।

फिनिशिंग स्कूल-R-CAT.

सामाजिक सुरक्षा पेंशन

वृद्धजन, विशेष योग्यजन, विधवा, एकल नारी सहित लगभग एक करोड़ लोगों को दी जा रही है पेंशन।

सस्ती घरेलू बिजली

38.18 लाख परिवारों का बिजली बिल शून्य।

किसानों को सस्ती बिजली

कृषि बिजली दर में कोई वृद्धि नहीं, इसके लिए ₹16 हजार करोड़ का वार्षिक अनुदान।

मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना

किसानों को कृषि बिजली कनेक्शनों पर ₹1000 प्रतिमाह का अतिरिक्त अनुदान। 8 लाख किसानों का बिजली बिल शून्य।

उड़ान योजना

बालिकाओं व महिलाओं को प्रतिमाह 12 सैनिटरी नैपकिन निःशुल्क। लगभग 1.45 करोड़ किशोरियां एवं महिलाएं लाभान्वित।

इंदिरा रसोई

₹8 में पौष्टिक एवं गुणवत्तापूर्ण भोजन। प्रदेश में 951 इंदिरा रसोई संचालित। राज्य सरकार द्वारा प्रति थाली ₹17 का अनुदान।

मुख्यमंत्री दुग्ध उत्पादक संबल योजना

दूध उत्पादकों को प्रति लीटर ₹5 का अनुदान। अब तक कुल ₹718 करोड़ का अनुदान।

राजस्थान संवाद

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।